अक्तूबर 2025

दादावाणी

Retail Price ₹ 20

टिकट करवाई ? वीज़ा करवाया महाविदेह का ? अपने ज्ञान के प्रति सिन्सियर रहना, उसी को ही वीज़ा कहते हैं। टिकट मिल जाएँ तो उसकी बात ही अलग है। आपकी दशा बिल्कुल मेरे जैसी दशा ही होकर रहेगी। इसलिए जब आपका भी ऐसा हो जाएगा तो हो गया, टिकट आ गई!

अडालज : रक्षाबंधन का उत्सव : 9 अगस्त 2025

अडालज : ज्ञानविधि : 10 अगस्त 2025

अडालज : जन्माष्टमी का उत्सव : 16 अगस्त 2025

वर्ष : 20 अंक : 12
अखंड क्रमांक : 240
अक्तूबर 2025
पृष्ठ - 32

Editor : Dimple Mehta
© 2025
Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved.

Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Printed at
Amba Multiprint
Opp. H B Kapadiya New High School, At-Chhatral, Tal: Kalol, Dist. Gandhinagar - 382729

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधर सिटी,
अहमदावाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज,**
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन : 9328661166-77
email: dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org
दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए: +91 8155007500

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)
5 साल
भारत : 1000 रुपये
वार्षिक
भारत : 200 रुपये
भारत में D.D./M.O.
'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

महापुण्यशाली 'दादा के महात्मा'

संपादकीय

इस काल का आश्चर्य है कि अक्रम विज्ञान उदय में आया है। 'अक्रम विज्ञानी' परम पूज्य दादा भगवान की सिद्धि और कृपा से आत्मज्ञान प्राप्त होने पर एक ही घंटे में शुद्धात्मा का *लक्ष* बैठते ही रास्ते में चलते-फिरते मुमुक्ष बन जाते हैं महात्मा। 'शुद्धात्मा दशा' प्राप्त करना, वही 'महात्मा पद' है। शुद्धात्मा और महात्मा में फ़र्क क्या है? व्यवहार से हम 'महात्मा' कहते हैं, परंतु हैं तो शुद्धात्मा। शुद्धात्मा तो भगवान हैं, परंतु वे भगवान अभी हममें प्रतीति स्वरूप से हुए हैं। वह प्रतीति, *लक्ष* जब पूर्ण होंगे, तब अनुभव दशा संपूर्ण होगी।

प्रस्तुत अंक में, आत्मज्ञान के बाद महात्मा किसे कहते हैं? उनकी दिनचर्या-नित्यक्रम क्या है? वे किस स्टेज पर हैं? उनका फर्ज़ और आदर्श जीवन कैसा होना चाहिए? वीतराग दशा में रहने के लिए महात्माओं को क्या करना चाहिए? मृत्यु के समय कैसा रहेगा? महाविदेह जाने के लिए क्या ज़रूरी है? मोक्ष कब होगा? इन सभी प्रश्नों के सटीक समाधान परम पूज्य दादाश्री ने यहाँ दिए हैं।

महात्मा तो किसे कहते हैं कि, 'चंदूभाई' (फाइल नं-1) क्रोध करे, परंतु 'खुद' अंदर से विरोध करे, यह नहीं होना चाहिए ऐसा आंतरिक संयम रहे, उसे महात्मा कहते हैं! महात्मा की कार्यवाही क्या है? यह जो पिछले जन्म का सब भरा हुआ माल है, उसे समतापूर्वक जाने देना। महात्मा की दिनचर्या कैसी होनी चाहिए? जैसा माल भरा हुआ है, वह निकलता रहे लेकिन राग-द्वेष नहीं होना चाहिए। महात्माओं की प्रगति किस जगह दिखाई देती है? किसी के साथ दखलंदाज़ी नहीं हो और खुद अपने आप में भी दखल नहीं हो।

परम पूज्य दादाश्री कहते हैं कि अपने ज्ञान के प्रति सिन्सियर रहें, उसे वीज़ा मिल गए कहते हैं। सत्तर प्रतिशत आज्ञा पालन से दादाश्री जैसी दशा आकर रहेगी, यानी आखिर तक की टिकट आ जाने के बाद एक जन्म में ही मोक्ष में जा सकते हैं। जिसे शुद्धात्मा का *लक्ष* बैठ गया वह आज्ञा पालन के पुरुषार्थ के बाद यहाँ भरत क्षेत्र में रह ही नहीं सकता, महाविदेह में खिंचे जाकर सीमंधर स्वामी के पास जन्म मिले, ऐसा नियम है। परम पूज्य दादाश्री पूर्ण गारन्टी (आश्वासन) देते हैं कि अंतिम घड़ी में समाधिमरण होगा तब 'खुद के स्वरूप' के अलावा कुछ याद ही नहीं आएगा, वहाँ दादा साथ ही हाज़िर रहेंगे!

कोटि जन्मों के पुण्य इकट्ठे होते हैं तब तो 'दादाश्री' मिलते हैं! करोड़ों जन्मों में भी जो वस्तु प्राप्त नहीं होती, वह महात्माओं को सहज ही प्राप्त हो गई है इसलिए अब इसका रक्षण करना। जिनके द्वारा हमने पटंतर प्राप्त किया, उन्हें सर्वस्व अर्पण करना। क्या थे और क्या हो गए! ऐसा अद्भुत ज्ञान प्राप्त होने के बाद अपना काम निकाल लेना है। अब तो भेख (संकल्प) लेना है कि सिर्फ यही, अन्य नहीं। अब मोक्ष का *नियाणां* (अपना सारा पुण्य लगाकर किसी एक चीज़ की कामना करना) करके पूर्णत: आज्ञा पालन का अखंड पुरुषार्थ शुरू करें, यही हृदयपूर्वक अभ्यर्थना।

जय सच्चिदानंद

महापुण्यशाली 'दादा के महात्मा'

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी 'चंदूभाई' नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें। ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

'महात्मा' पद में, रहे आंतरिक संयम

प्रश्नकर्ता : महात्मा किसे कहा जाता है?

दादाश्री : जिन्हें आंतरिक संयम रहे, उन्हें महात्मा कहा जाता है। बाह्य संयम तो हो या न भी हो! कषाय करता है, तब तक महात्मा नहीं कहा जा सकता। 'चंदूभाई' क्रोध करे लेकिन 'खुद' अंदर से मना करता रहे। 'अरेरे, यह क्यों हो रहा है, यह नहीं होना चाहिए', उसे ऐसा रहे तो वह आंतरिक संयम कहलाता है। उसे महात्मा कहा जाता है!

अपने सभी महात्मा संयमी कहे जाएँगे। संयमी अर्थात् क्या कि यह प्रकृति जो कर रही है, उसके विरुद्ध खुद का अभिप्राय खड़ा हो जाए। प्रकृति गुस्सा करे तो उसे खुद को अच्छा नहीं लगे ऐसा अभिप्राय अलग हो जाए, वह संयमी है। जो प्रकृति में तन्मयाकार नहीं होता, वह संयमी है। यानी जैसे प्रकार दो अलग-अलग लोग हों, उस प्रकार से बरते, उसे कहते हैं संयम। प्रकृति है, उसे आपको देखते रहना है। वह भी एक संयम है लेकिन खुद को ऐसा लगता रहे कि खराब है। वहाँ पर इन आज्ञाओं का पालन करें न, तो संयम उत्पन्न होता है।

आज्ञा पालन से परिणमित हो आंतरिक संयम

यह ज्ञान लेने के बाद अंदर संयम रहता है! संयमी तो उसे कहते हैं कि कोई गालियाँ दे, कोई अपमान करे तब भी वे सब निर्दोष दिखाई दें! कोई दोषित न दिखाई दे!

एक बार कोई आपको गाली दे और तब आप संयम रखो तो भगवान ने उसे 'प्यॉर संयम' कहा है। भगवान तो प्यॉर संयम के भूखे हैं। प्यॉर संयम रखकर तो देखो, कितनी सीढ़ियाँ चढ़ा देंगे। एक ही बार संयम रखने से दस-बीस सीढ़ियाँ यों ही चढ़ जाता है, इसे कहते हैं लिफ्ट मार्ग! आपको खुद को भी पता चल जाता है कि, 'ओहोहो, मैं तो यहाँ था और अब तो यहाँ तक पहुँच गया!'

इन भाई से एक स्कूटर वाला टकरा गया तो पैर में फ्रेक्चर हो गया। तब वह व्यक्ति घबरा गया बेचारा। लोगों ने उसे पकड़ा। तब इनमें खुद में ज्ञान प्रकट था ही। इन्होंने कहा कि, 'भाई, उन्हें जाने दो। उन्हें बिल्कुल सेफली (सुरक्षित) जाने दो।' ऐसे इन्होंने सब से विनती करके छुड़वाया, वर्ना सभी उसे मारते। अब इसी को संयम कहते हैं। यह सब से बड़ा संयम है। ऐसा संयम मनुष्य को परमात्मा बनाता है। आत्मा में से परमात्मा बनता जाता है। ज़रा सा आपका विचार भी नहीं बिगड़ा है, नहीं?

प्रश्नकर्ता : नहीं, बिल्कुल नहीं, दादा।

दादाश्री : मनुष्य से परमात्मा बनने का रास्ता ही इतना, संयम का है! यह ज्ञान मिलता है तब, शुद्धात्मा होने के बाद संयमी कहलाते हो। अपने महात्माओं को निरंतर संयम रहेगा। यानी आंतरिक संयम रहेगा, बाह्य संयम नहीं। अर्थात् इन पाँच आज्ञाओं का पालन करने से आपको निरंतर आंतरिक संयम रहता ही है। यह संयम मोक्ष की ओर ले जाता है।

मन को वश करे, वह महात्मा

प्रश्नकर्ता : अपने महात्मा आपका अध्ययन करें फिर भी मन वश में नहीं हो तो क्या करना चाहिए?

दादाश्री : महात्माओं को क्या आज्ञा मिली है? मन, वह ज्ञेय है और आप ज्ञाता हो। तो मन उनके वश में हो गया है। यानी मन वश में नहीं हो रहा हो तो उनकी भूल है। वे मेरी आज्ञा का पालन नहीं करते हैं, वर्ना उनके वश में हो गया होता, संपूर्ण रूप से।

जब तक 'मैं चंदूलाल हूँ', ऐसा ज्ञान और भान है तब तक मन के साथ लेना-देना है। तब तक मन के साथ तन्मयाकार हो जाता है। अब आप शुद्धात्मा हुए इसलिए मन के साथ लेना-देना ही नहीं रहा। यानी 'चंदूभाई' का मन है लेकिन 'आपको' तो उस मन को देखते रहना है कि ऐसे विचार कर रहा है। गलत विचार कर रहा है उसे देखते रहना है। आपका पद ज्ञाता-द्रष्टा है। ज्ञाता-द्रष्टा पद आ गया इसलिए मन वश हो गया, ऐसा कहा जाएगा। दादा के महात्मा किसे कहते हैं कि अब मन वश हो गया है।

महात्माओं का नित्यक्रम

प्रश्नकर्ता : रोज़ सुबह उठे तब से लेकर रात तक का (महात्माओं का) नित्य कार्यक्रम क्या होना चाहिए?

दादाश्री : यहाँ पर ऐसा कोई नियम नहीं है। जहाँ नियम होता है, वहाँ हिसाब रखना होता है। यहाँ पर तो नो लॉ, लॉ है। अपना यह निश्चय है कि 'ऐसा होना चाहिए, यह नहीं होना चाहिए' लेकिन फिर भी जो निकले, वही सही। कोई सिगरेट पीता हो वह बाहर जाकर पी आता हो लेकिन मन में ऐसा रहना चाहिए कि 'यह नहीं होनी चाहिए'।

प्रश्नकर्ता : सुबह जल्दी उठना चाहिए ऐसा कुछ है क्या?

दादाश्री : नहीं, भाई। कोई जल्दी उठता हो, तीन बजे से उठकर (पानी का) बंबा जलाने वाला भी हो और कोई देर से उठता हो और साढ़े नौ बज जाएँ, तब मैं कहता हूँ कि 'भाई, सूर्यनारायण कब से उठकर यहाँ आ गए हैं, तू ज़रा सोच तो सही! ये इतने बड़े, उठकर आ गए हैं, तू उनसे भी कितना बड़ा है?' तब वह जल्दी-जल्दी उठ जाता है क्योंकि तीन बजे से उठकर यहाँ पर आने वाले भी हैं और साढ़े नौ वाले भी हैं। हर तरह के लोग हैं!

प्रश्नकर्ता : लेकिन नौ बजे उठने की प्रकृति हो तो क्या करना चाहिए?

दादाश्री : उठने के बाद दातुन करना है और क्या करना है? अपना निश्चय होना चाहिए। अपना ज्ञान कैसा होना चाहिए? 'जल्दी उठना चाहिए'। फिर भी नहीं उठ पाते, तो प्रतिक्रमण करना चाहिए। 'हे दादा भगवान, माफी माँगता हूँ। यह नहीं होना चाहिए।' बस, इतना ही। उसके बाद दातुन करके चाय पीओ। देर से उठा इसलिए चाय नहीं पीनी है, ऐसा नहीं, आराम से पीनी है। डेढ़ कप पीते हो तो उतनी पीनी है।

समभाव से निकाल, वह है महात्माओं की कार्यवाही

प्रश्नकर्ता : महात्मा की कार्यवाही क्या है?

दादाश्री : यह जो पिछले जन्म का सारा भरा हुआ माल है, उसे समतापूर्वक जाने देना।

प्रश्नकर्ता : ज्ञान लिए पाँच-पाँच साल हो गए हैं फिर भी अभी तक हमारा मेल क्यों नहीं बैठ पाता?

दादाश्री : अब तो मेल बैठ गया, ऐसा ही कहा जाएगा। ऐसा किस तरह का मेल बैठाना है?

प्रश्नकर्ता : इन भूलों में से।

दादाश्री : अंदर साफ हो जाएगा। अभी भी माल तो निकलता रहेगा। जो कचरा भरा है न, वह तो निकलेगा ही न! वर्ना टंकी खाली नहीं होगी न! पहले तो यह कचरा निकल रहा है, ऐसा जानते नहीं थे। अच्छा निकल रहा है, यही जानते थे न? उसे कहते हैं संसार और 'यह कचरा माल है' ऐसा जान लिया, तो वह है मुक्त होने की निशानी।

ऐसा जो समझ में आता है कि, 'यह गलत माल भर लाए हैं', वहाँ पर आत्मविज्ञान है, वहाँ प्रज्ञा है, वह 'देखती' है। देखने वाले में वह प्रज्ञा है। प्रतिक्रमण करके 'यह मेरा नहीं है', इतना बोले तो भी बहुत हो गया।

अब आपको निरंतर इन आज्ञाओं में रहना है, लेकिन अंदर जो माल भरा है वह रहने नहीं देता इसलिए हो सके उतने ज़्यादा प्रयत्न करने हैं आपको। माल का स्वभाव क्या है? आज्ञा में नहीं रहने देना। अब वह माल क्या भरा हुआ है? तब कहते हैं कि, इधर से मूर्च्छा के परमाणु भरे, इधर से अहंकार के परमाणु भरे, इधर से लोभ के परमाणु भरे, सारे जो परमाणु भरे हैं न, अब वे जो परमाणु हैं, उनका समय परिपक्व हो जाए न, तब फिर वे ढोलक बजाते हैं। 'अरे! तुम क्यों ढोलक बजा रहे हो?' तब कहते हैं, 'हम हैं न अंदर।' तो उनका समभाव से *निकाल* कर लेना।

महात्माओं का आदर्श जीवन

प्रश्नकर्ता : महात्माओं का आदर्श जीवन कैसा होना चाहिए?

दादाश्री : आसपास वाले, घर वाले, बाहर वाले, सभी कहें कि 'कहना पड़ेगा'! एक आवाज़, सभी हरी झंडी दिखाएँ। मैं बड़ौदा से निकलता हूँ तो सभी महात्माओं को बताता हूँ। एक महात्मा ने लाल झंडी दिखाई तब मैंने कहा, 'रुको भाई। अरे! गाड़ी रोको।' दो सौ महात्माओं में से एकाध महात्मा लाल झंडी दिखाए तो गाड़ी रुकवा देते हैं। 'क्या बात है, बताओ', उसका समाधान करवाकर फिर जाते हैं क्योंकि मैं उन महात्माओं के ताबे में हूँ, वे मेरे ताबे में नहीं हैं। अत: अपने महात्माओं को तो सभी के ताबे में रहना चाहिए।

आदर्श व्यवहार अर्थात् आस-पास पड़ोस में पूछो, घर में पूछो, 'एनीव्हेर', (कहीं भी) पूछो, तो हमारा व्यवहार आदर्श होता है। घर में, पत्नी के साथ, रिश्तेदारों के साथ, किसी भी जगह पर किसी के लिए दु:खदायी नहीं हो, ऐसा व्यवहार होता है। वर्ना फिर उसने तो निश्चय पाया ही कहाँ है? व्यवहार आदर्श होना चाहिए। यदि नहीं हो सके तो उसका ध्येय आदर्श व्यवहार का होना ही चाहिए! जितना व्यवहार आदर्श, उतना निश्चय प्रकट होने लगेगा।

प्रश्नकर्ता : इन पहली दो आज्ञाओं में ही पूरा आदर्श व्यवहार आ जाता है। यों शुद्धात्मा दिखाई देते हैं और यों वे उदयकर्म दिखाई देते हैं।

दादाश्री : हाँ, आदर्श व्यवहार आ जाता है। शुद्ध व्यवहार हो तभी शुद्ध निश्चय होता है, वर्ना निश्चय नहीं है ऐसा माना जाएगा। समभाव से *निकाल* नहीं करे और फिर कहे, 'हमें निश्चय से आत्मा प्राप्त हो गया है, तो वह नहीं चलेगा।

बेस होना चाहिए।' आस-पास वाले शिकायत करें और यह कहे कि 'मैं आत्मा हो गया', तो कैसे चलेगा?

किसी को ज़रा सा भी त्रास न हो और घर में अपना व्यवहार सुंदर रहे, ऐसा आदर्श व्यवहार होना चाहिए। सब से पहले घर में साफ हो जाना चाहिए। जिस प्रकार 'चैरिटी बिगिन्स फ्रॉम होम', उसी प्रकार आदर्श व्यवहार 'बिगिन्स फ्रॉम होम' (घर से शुरुआत) होना चाहिए।

महात्माओं की दिनचर्या

प्रश्नकर्ता : अक्रम मार्ग के महात्माओं की दिनचर्या कैसी होनी चाहिए?

दादाश्री : जैसा माल भरा हुआ है, वह निकलता रहेगा लेकिन राग-द्वेष न हों, वही दिनचर्या है। कोई थप्पड़ लगा जाए, कोई नुकसान कर जाए तो राग-द्वेष न हों, ऐसा होना चाहिए। राग-द्वेष, वह तो दखल है। दखल वाला माल आपको खपाते रहना है, दखल नहीं रहे तब समझो हो चुका। दूसरा, जो है वही माल निकलता रहता है। वह माल आपको खपाते रहना है, दुकान खाली कर देना है। नया माल नहीं लाना है और पुराना माल खपा देना है। हाँ, ग्राहक तो आएँगे, उनमें कभी नालायक व्यक्ति भी मिलेगा, उसके साथ झगड़ा किए बगैर खपा देना है। नालायक व्यक्ति मिल जाए न, वह दोगुना माल ले जाएगा और फिर हाथ में पैसे भी नहीं देगा। वह भी माल खपा देना है। जिसे व्यापार शुरू रखना है, उसे तो हम ऐसा नहीं कह सकते न, कि खपा देना है! वह तो बेचता जाता है और नया माल लाता भी जाता है। उसकी तो दुकान चलती ही रहेगी। जबकि आपको तो दुकान बंद कर देनी है न? बंद करनी है, उसके लिए तो रास्ता दिखाया है कि भाई, इस तरह से माल खपा देना, पाँच आज्ञा में रहकर। वह लूटकर चला जाए तो आप लूटने मत जाना। आपको माल खपा देना है। उसे तो व्यापार जारी रखना है। व्यापार जारी रखने वाला ऐसा करता है या नहीं करता? जिसे खपा ही देना है, उसे व्यापार जारी नहीं रखना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : सभी तरह के ग्राहक आते हैं।

दादाश्री : ग्राहक तो एक तरह के नहीं आएँगे, हर तरह के आएँगे। इतनी बड़ी आबादी में किस तरह का ग्राहक नहीं मिलेगा आपको! ग्राहक मिलेगा वह गप्प नहीं है परंतु भयभीत होने जैसा भी नहीं है कि फलाना भाई को ग्राहक मिला, ऐसा ग्राहक मुझे मिल जाए तो क्या होगा? नहीं, वह तो उसी के लायक था। हिसाब हैं सारे। हिसाब बगैर तो ग्राहक भी नहीं मिलता। हिसाब बगैर मिलता होता तब तो सभी को भय ही लगता रहता न, कि कल सुबह क्या होगा? नहीं, कुछ नहीं होगा। जो हिसाब है, वही होना है और वही व्यवस्थित है। जो हिसाब नहीं है वह नहीं होगा।

अकषाय पद, वह भगवान पद

प्रश्नकर्ता : महात्मा की उपमा पाने के बाद फिर उसका फर्ज़ क्या है?

दादाश्री : वीतरागता रखनी और राग-द्वेष नहीं करने।

प्रश्नकर्ता : वीतराग दशा में रहने के लिए क्या करना चाहिए?

दादाश्री : किसी के प्रति राग-द्वेष, क्रोध-मान-माया-लोभ नहीं करना, वह वीतराग है। वैसा किया तो वीतराग दशा चूक गए। अगर वैसा हो गया तो जानना कि यह चूक गए। फिर

से वापस साध लेना। अगर चूक गए तो फिर से साध लेना। ऐसा करते-करते स्थिर हो जाएँगे। जिन्हें ऐसा करना है वे निबेड़ा तो लाएँगे ही न!

'हम' स्वरूप का ज्ञान दें, उसके बाद क्रोध-मान-माया-लोभ, रहते ही नहीं हैं। यह 'ज्ञान' देने के बाद तंत गया। तंत को ही क्रोध-मान-माया-लोभ कहते हैं। जिसका तंत गया उसका क्रोध-मान-माया-लोभ सब कुछ गया! तब क्या राग-द्वेष होते हैं? क्रोध-मान-माया-लोभ? नहीं न! तो फिर वह वीतरागता ही है न। अब दूसरा कुछ ढूँढने को नहीं रहा। वही वीतरागता है। वीतरागता और कुछ नहीं है। यों तो व्यक्ति कहता है, 'नहीं-नहीं मुझे कोई राग-द्वेष नहीं हैं' परंतु जब इस तरह स्पष्ट करते हैं, 'क्रोध-मान-माया-लोभ', तब कहते हैं, 'वे तो हैं'। तो भाई, तू समझता ही नहीं है न राग-द्वेष को! क्रोध-मान-माया-लोभ का छोटा स्वरूप राग-द्वेष है, शॉर्ट स्वरूप। कषाय में ये चार ही योद्धा हैं, दुनिया इन कषायों से चल रही है। या तो विषय में रहते हैं या फिर कषाय में रहते हैं या फिर अकषाय में अर्थात् भगवान पद में रहते हैं। वह अकषाय पद, वहाँ से तो उनका भगवान पद माना जाता है लेकिन लोगों में कह नहीं सकते। कहने से लोग उन्हें उल्टा बोलेंगे, 'ये बड़े भगवान बन बैठे हैं!' हमें मन में समझ जाना है कि हम अंतिम स्टेशन पर आ गए हैं। किसी को कहने की ज़रूरत नहीं है। आप मुझे कह सकते हैं! किसी और को कहेंगे तो लोग क्या कहेंगे?

प्रश्नकर्ता : मूर्ख कहेंगे।

दादाश्री : उन्हें कभी भी नहीं कह सकते। बाकी यह अकषाय पद वह तो भगवान पद है।

प्रैक्टिकली ज्ञानी को देखकर प्रकटे वीतरागता

प्रश्नकर्ता : दादा, परंतु हम महात्माओं में संपूर्ण वीतरागता कब प्रकट होगी?

दादाश्री : एक से लेकर 100 तक लिखना शुरू करें तो क्या एकदम से 100 आ जाएँगे?

प्रश्नकर्ता : नहीं आएँगे।

दादाश्री : अर्थात् 20 लिखने के बाद फिर 21, 22, 23, 24... हमें यह देखना है कि आगे लिखा जा रहा है या नहीं। यानी वह तो पूर्ण हो जाएगा। वही पूर्ण कर रहा है, हमें पूर्ण करने की ज़रूरत नहीं है। वह स्पीड (गति) ही इसे पूर्ण करेगी।

सब से पहले यह देखना है कि राग-द्वेष कैसे कम हों। अब पल्टी खाई है उल्टेपन से सीधेपन में, अतः अब वीतरागता कैसे बढ़े, पूर्ण हो, उस तरफ दृष्टि गई। पहले राग-द्वेष कम करने पर दृष्टि थी। पूरा जगत् राग-द्वेष कम करने के लिए ही झंझट करता है न! पूरे दिन कितना दुःख, कितनी चिंता, कितनी वरीज़! भयंकर त्रिविध ताप!

वीतरागता कैसी है आपमें? थोड़ी, ज़रा सी वीतरागता। एक अंश भी वीतरागता हो तो उसे यह कहा जाएगा कि राग-द्वेष की सर्वांशता गई! एक अंश भी वीतरागता, अंदर राग-द्वेष के रस को सर्वांशरूप से खत्म कर देती है। उसमें राग-द्वेष दिखाई ज़रूर देते हैं, लेकिन अंदर रस (रुचि) नहीं रहता। उस वीतरागता को तो देखो।

प्रश्नकर्ता : आप जैसी वीतरागता महात्माओं में कब और कैसे उतरेगी?

दादाश्री : जैसे-जैसे मेरे टच में रहेंगे वैसे-

वैसे वह आती जाएगी। इसे रटकर नहीं सीखना है, देखकर सीखना है।

लोग आँखों के सामने देखते हैं। लोग, जीवमात्र आँखों में क्यों देखते हैं? तो कहते हैं, 'आँखों में सब कुछ पढ़ा जा सकता है, भाव! क्या भाव है, वह सारा ही पढ़ा जा सकता है'। अत: लोग समझ जाते हैं कि, 'इस भाई को घर में मत घुसने देना। इसकी आँखों के भाव अच्छे नहीं हैं', ऐसा कहते हैं। इसी प्रकार ज्ञानी की आँखों में वीतरागता दिखाई देती है, किसी भी प्रकार का राग या द्वेष कुछ भी नहीं दिखाई देता। उनकी आँखों में किसी प्रकार की विकृति नहीं होती। लक्ष्मी की भीख नहीं होती, ऐसा कुछ भी नहीं होता, सिर्फ वीतरागता होती है। उन्हें देखते-देखते वह अपने में भी आ जाती है। और कुछ नहीं है इसमें।

अर्थात् इसमें यों थिअरेटिकल से कुछ नहीं होगा। प्रैक्टिकली होना चाहिए। थिअरेटिकल तो सिर्फ जानने के लिए ही है। प्रैक्टिकली का अर्थ क्या है? प्रैक्टिकल में तो ज्ञानी पुरुष को देखने से, उनके टच (संपर्क) में आने से सब कुछ प्राप्त हो जाता है, आसानी से प्राप्त हो जाता है। वह तो आपको मेरे उदय का अवसर देखने को नहीं मिला है, नहीं तो मुझे कोई डाँटने वाला मिल जाए और आपको वह देखने को मिले, तब असल मज़ा आएगा!

जिन्हें कोई भी किसी भी प्रकार से समझ न पाए, वे हैं 'ज्ञानी पुरुष'! 'ज्ञानी पुरुष' को सिर्फ उनकी वीतरागता से पहचाना जा सकता है!

महात्माओं को प्राप्त हुआ शुक्लध्यान

राग-द्वेष कम करने के लिए 'वीतरागों का विज्ञान' को समझने की ज़रूरत है। ये 'अक्रम-ज्ञानी' की सिद्धियाँ-रिद्धियाँ, देवी-देवताओं की कृपा, इन सब के कारण एक घंटे में ग़ज़ब का पद आपको प्राप्त हो जाता है! रात को नींद में से उठते हो, तब लोगों को तो इस जगत् की कोई भी सब से प्रिय चीज़ हो, वही पहले याद आती है लेकिन आपको तो 'शुद्धात्मा' ही पहले याद आता है। अलख का कभी भी *लक्ष* नहीं बैठता है। इसीलिए तो आत्मा को 'अलख निरंजन' कहा है! लेकिन यहाँ एक घंटे में आपको *लक्ष* बैठ जाता है! 'शुद्धात्मा' का *लक्ष* उसके बाद कभी भी नहीं चूकता और निरंतर आत्मा *लक्ष* में ही रहता है।

यदि आपसे ऐसा पूछा जाए कि वास्तव में आप चंदूभाई हो या शुद्धात्मा हो, तो आप क्या कहोगे?

प्रश्नकर्ता : यों तो शुद्धात्मा हैं लेकिन व्यवहार से चंदूभाई।

दादाश्री : हाँ, रियली आप शुद्धात्मा हो न?

प्रश्नकर्ता : हाँ, अवश्य।

दादाश्री : यदि आप वास्तव में शुद्धात्मा हो तो आपके *लक्ष* में क्या रहता है? आपके ध्यान में क्या रहता है? 'मैं शुद्धात्मा हूँ' ऐसा ध्यान में रहता है या नहीं रहता?

प्रश्नकर्ता : हाँ, वही ध्यान में रहता है, ठीक है।

दादाश्री : आपको उसका जो ध्यान रहता है, वह शुक्लध्यान है। अब आपको शुक्लध्यान उत्पन्न हुआ है। 'मैं शुद्धात्मा हूँ', जिसे ऐसा ध्यान रहता है, भगवान ने उसे शुक्लध्यान कहा है क्योंकि 'शुद्धात्मा हूँ', वह ध्यान चूकता नहीं, भूलाता नहीं, वह *लक्ष* में ही रहा करता है कि 'मैं शुद्धात्मा हूँ'।

प्रश्नकर्ता : उसे भुलाना चाहें तब भी नहीं भूल पाते।

दादाश्री : नहीं भूल सकते। वह तो यों संसार व्यवहार में भी 'मैं चंदूलाल हूँ' ऐसा जो समझते हैं न, वे कई लोग खुद का वह भूलना चाहते हैं, लेकिन क्या उसे भूल पाते हैं? उसके लिए तो ज्ञानी के माध्यम से विधिवत उनके तार कट जाने चाहिए। सूक्ष्म तार, श्रद्धा के तार बंधे हुए हैं न। वे तार टूट जाने चाहिए। गलत श्रद्धा, रोंग बिलीफें टूट जाएँ और राइट बिलीफ बैठ जाए तो काम आएगा। राइट बिलीफ को 'सम्यक् दर्शन' कहा गया है। 'मैं शुद्धात्मा हूँ', ऐसा हो गया तब सब हल आ जाएगा।

शुद्धात्मा और महात्मा में फर्क

प्रश्नकर्ता : शुद्धात्मा और महात्मा में क्या फर्क है?

दादाश्री : शुद्धात्मा तो भगवान हैं। महात्मा तो, औरों से ज़रा टॉप पर हो तो उसे 'महात्मा' कहा जाता है। यह तो हम व्यवहार से 'महात्मा' कहते हैं लेकिन हैं तो शुद्धात्मा। शुद्धात्मा तो भगवान हैं लेकिन वे भगवान अभी आप में प्रतीति के रूप में प्रकट हुए हैं। उस प्रतीति अनुसार जागृति जब पूर्ण हो जाएगी, तब संपूर्ण अनुभव दशा आएगी। अभी प्रतीति, *लक्ष* और अनुभव में उतार-चढ़ाव होते रहते हैं।

आपको (महात्माओं को) शुद्धात्मा पद क्यों दिया गया है? आप शुद्धात्मा हो और चंदूभाई जो कुछ भी करते हैं उसके लिए आप रिस्पोन्सिबल नहीं हो, ऐसा विश्वास हो जाए। अच्छा करते हो उसका भी दाग़ नहीं लगता और गलत करते हो उसका भी दाग़ नहीं लगता। कर्तापद मेरा है ही नहीं, इसे शुद्धात्मा का *लक्ष* बैठ गया कहेंगे। कर्ताभाव छूटने पर ही शुद्धात्मा का *लक्ष* बैठता है।

प्रश्नकर्ता : अपना कोई महात्मा कर्ताभाव में रहता ही नहीं है न? चाहे किसी भी तरह से, अनजाने में भी कर्ताभाव में नहीं रह सकता। अनजाने में?

दादाश्री : जो इन पाँच आज्ञाओं का पालन करने के लिए तैयार है, थोड़ा-बहुत पालन करता है उसे किसी भी तरह की परेशानी नहीं है। वह कर्ताभाव में रहता ही नहीं है।

प्रश्नकर्ता : दादा, तो फिर (अपने महात्माओं को) कौन सी श्रेणी में मानें? अनुभव, *लक्ष* और प्रतीति इन तीनों में मानना है क्या?

दादाश्री : इन तीनों से नीचे नहीं जा सकता, वही अपना अक्रम विज्ञान है। (महात्माओं को) खुद शुद्धात्मा हो गए, इसलिए मोक्ष तय हो गया, इसमें दो राय नहीं हैं न! लेकिन स्वाद् कितना आता है? प्रतीति का। आप रात में जाग जाते हैं तो तुरंत 'मैं शुद्धात्मा हूँ', वह अपने आप आपको याद आ जाता है, उसे *लक्ष* बैठा कहेंगे। यानी 'मैं शुद्धात्मा हूँ', हंड्रेड परसेन्ट (सौ प्रतिशत) प्रतीति बैठ गई और *लक्ष* बैठ गया। *लक्ष* अर्थात् जागृति। जो जागृति है न, वह अब बढ़ते-बढ़ते संपूर्णता प्राप्त करेगी और तीसरा, अनुभव होता है। उस अनुभव के आधार पर आप रोज सत्संग में आते हो। आपने कुछ चखा और मीठा लगा।

श्रीमद् राजचंद्र ने इसे क्या कहा है? 'परमार्थ समकित' कहा है। अर्थात् 'क्षायक समकित' कहा है।

कृपालुदेव ने आत्मसिद्धि में कहा है, कि '*वर्ते निज स्वभावनुं, अनुभव, लक्ष अने प्रतीत*।'

तो आपको खुद के आत्मस्वभाव की प्रतीति रहती है और यह भी *लक्ष* में रहता है कि 'मैं शुद्धात्मा हूँ' और अनुभव सावधान करे, ऐसा भी रहता है। लेकिन संपूर्ण अनुभव बरतेगा, जब सभी के साथ अभेदता महसूस होगी, तब वह शुद्धात्मा हो सकता है।

सब से पहले है शुद्धात्मा और जो परमात्मा है, वह खुद, रियल वस्तु है। वह स्टेशन अलग है और शुद्धात्मा का स्टेशन अलग है। शुद्धात्मा वह तो वस्तु स्वरूप का सब से पहला 'उपनगर' है। फिर ऐसे कितने ही 'उपनगर' आते हैं, उसके बाद फिर मुख्य स्टेशन आता है। जैसे-जैसे अनुभव बढ़ते जाएँगे न, वैसे-वैसे आगे के 'उपनगर' आते जाएँगे, स्टेशन बदलता जाएगा। आपको इस पहले स्टेशन पर उतार दिया है, मोक्ष की बाउन्ड्री (सीमा) में। शुद्धात्मा वह पहला स्टेशन है, वहाँ से सेन्ट्रल स्टेशन की ओर जाएँगे, तब जाकर अंतिम स्टेशन आएगा।

महात्माओं को बरते केवलदर्शन

प्रश्नकर्ता : ज्ञान मिलने के बाद महात्माओं की कौन सी स्टेज होती है?

दादाश्री : केवलदर्शन हो चुका है यह। 'मैं कुछ भी नहीं करता हूँ', ऐसा निरंतर ध्यान रहता है, वह केवलदर्शन हो गया, उसे 'क्षायक समकित' कहते हैं। यह तो बहुत उच्च पद प्राप्त किया है। अब आप इसे जितना संभालोगे, उतना आपका।

केवलदर्शन अर्थात् क्षायक समकित। इसके लिए अपने शास्त्रों में 'मना' किया गया है। इस काल में नहीं हो सकता, फिर भी यहाँ पर हो गया है। क्षायक समकित अर्थात् वह समकित जो कभी भी जाए नहीं, जो निरंतर रहे। अब आपको निरंतर शुद्धात्मा का ध्यान रहेगा।

यानी कि *'वर्ते निजस्वभावनुं अनुभव-लक्ष-प्रतीत, वृत्ति वहे निजभावमां, परमार्थे समकित।'* उसके बाद, *'वर्धमान समकित थई टाले मिथ्याभास, उदय थाय चारित्रनो वीतराग पदवास।'* उसके बाद और क्या बचा? केवलज्ञान का पद। केवल निज स्वभाव का अर्थात् आत्मा को देखा। *'केवल निज स्वभाव का अखंड बरते ज्ञान।'* कैसा? अखंड। *'कहीए केवलज्ञान ते देह छतां निर्वाण।'* आपको यह अखंड प्रतीति रहती है, अखंड *लक्ष* (जागृति) रहता है लेकिन ज्ञान नहीं बरतता। यानी कि केवलदर्शन तक पहुँच गए।

प्रश्नकर्ता : *'केवल निजस्वभावनुं अखंड वर्ते ज्ञान, कहीए केवलज्ञान ते देह छतां निर्वाण।'*

दादाश्री : निरंतर आत्मरमणता रहे, इस *पुद्गल* में ज़रा सी भी रमणता न रहे, वह निज स्वभाव में कहा जाता है। केवल निज स्वभाव में निरंतर आत्मरमणता, यह संसार रमणता ही है नहीं। और फिर 'अखंड बरते ज्ञान', उसे केवलज्ञान कहते हैं। वह ज्ञान 'हमें' निरंतर नहीं रह पाता, थोड़ी कमी रहती है इसलिए चार डिग्री कम हैं ऐसा कहते हैं। यानी कि आपको निज स्वभाव में अखंड नहीं बरतेगा। ज्ञान अर्थात् आप कौन से स्टेशन पर खड़े हो? दो बड़े स्टेशन हैं : एक है, 'केवल निज स्वभाव का अखंड बरते ज्ञान।' और यहाँ पर नीचे दूसरा वाक्य लिखा है कि, 'केवल निज स्वभाव का अखंड बरते दर्शन; कहते हैं केवलदर्शन वह, देह है फिर भी निर्वाण।' यानी कि आप सभी को केवलदर्शन के स्टेज पर ला दिया है।

'मैं नहीं करता हूँ', ऐसा निरंतर ध्यान में रहे तो वह केवलदर्शन है यों कुछ देर रहे और कुछ देर न रहे तो वे केवलदर्शन के अंश हैं,

लगभग फिफ्टी परसेन्ट या साठ परसेन्ट। निरंतर रहे तो उसे 'केवलदर्शन' कहते हैं।

प्रश्नकर्ता : अर्थात् निरंतर ऐसा ध्यान रहना चाहिए?

दादाश्री : हाँ, निरंतर ध्यान में रहना चाहिए कि, 'यह मैं नहीं कर रहा हूँ'।

जैसे स्टीमर में बैठते हैं तो हमें ऐसा ध्यान में रहता है न कि, 'स्टीमर ही चल रहा है, मैं नहीं चल रहा हूँ', ऐसा ध्यान रहना चाहिए। स्टीमर में तो वह देखकर बैठा है न, इसलिए फिर उसे ऐसा लगता है कि, यह स्टीमर ही चल रहा है और मैं बैठा हुआ हूँ। इसमें उस प्रकार से देखकर नहीं बैठा न! अर्थात् निरंतर ध्यान में रहना चाहिए, बस। एक क्षण के लिए भी कर्तापन नहीं लगे तो उसे केवलदर्शन कहा जाएगा और वह ज्ञान में और वर्तन में आ गया हो तो वह केवलज्ञान हो गया।

महात्माओं को यह जो दर्शन दिया है, यह इतना उच्च दिया है जो केवलदर्शन तक का दे दिया है। इससे सभी पज़ल सॉल्व हो जाएँ ऐसा हैं और झट-पट हल आ जाए, ऐसा है। अपने महात्माओं को केवलदर्शन बरतता है! उसी के आनंद में रहते हैं। वर्ल्ड का अद्‌भुत पद कहा जाएगा! इस दूषमकाल में केवलदर्शन तो ग़ज़ब का पद कहा जाएगा!

महात्मा भगवान हो जाएँगे एक दिन

प्रश्नकर्ता : आपने जो कहा कि हम सभी को आप भगवान बनाना चाहते हैं, वह तो जब बनेंगे तब सही। अभी तो नहीं हुए हैं न?

दादाश्री : लेकिन ऐसा होगा न! क्योंकि यह अक्रम विज्ञान है! जो बनाने वाला है, वह निमित्त है और बनने की जिसकी इच्छा है, जब वे दोनों इकट्ठे होंगे तो वैसा होगा ही! बनाने वाला क्लियर है और अपना क्लियर है। अपनी और कोई नीयत नहीं है। अत: एक दिन सारे अंतराय टूट जाएँगे और भगवान होकर रहेगा, जो कि अपना मूल स्वरूप ही है!

ये अंदर जो प्रकट हुए हैं, वे पूरे ब्रह्मांड के नाथ हैं, वे दादा भगवान हैं! वे दादा भगवान आप में भी हैं, लेकिन प्रकट नहीं हुए हैं। वे पूर्ण प्रकाश में आ जाने चाहिए। अब पूर्ण प्रकाश में आने लगेंगे।

आपको ज्ञान दिया है, फिर यह जब विज्ञान स्वरूप हो जाएगा तब फुल प्रकट होगा, परफेक्ट। अभी आप में भगवान ज्ञान स्वरूप से हैं ही, वे विज्ञान स्वरूप हो जाएँगे! हमारे अंदर विज्ञान स्वरूप हो चुके हैं इसलिए वह 'भगवान पद' कहा जाता है।

हमारा दिया हुआ ज्ञान, वह तो एक्ज़ेक्ट (सही) अपनी जगह पर है। जितना आपको दृष्टिगम्य हुआ, उतना आपका। बाकी का दृष्टिगम्य नहीं हुआ है। मूल स्वरूप में जो ज्ञान दिया है, उस मूल स्वरूप की अभी तक आपमें एक्ज़ेक्टनेस (यथार्थता) नहीं आई है, पूरी तरह से। तब तक बढ़ रहा है ऐसा लगता है। वर्ना यह ज्ञान तो वही का वही है, मूल स्वरूप में ही है। लेकिन मूल स्वरूप में जब एक्ज़ेक्टनेस आएगी, तब फिर बढ़ना या कम होना नहीं रहेगा। यह क्या बढ़ता और कम होता है? आपको जो दृष्टि मिलती है वह बढ़ती है दिनोंदिन, मूल स्वरूप होना चाहती है। जैसा दिया था वैसा, उसी स्वरूप होना चाहता है।

लिफ्ट मार्ग मिलने पर महात्माओं में उल्लास

प्रश्नकर्ता : ज़िंदगी में वर्ष कम हैं और

रास्ता लंबा है, पर यह अक्रम वस्तु मिल गई, उससे बहुत उल्लास आता है!

दादाश्री : ऐसा है न, ऐसा कभी होता नहीं है और हुआ तो अपना काम निकाल लेना है। उल्लास तो आएगा ही न! मुझे यह ज्ञान प्रकट हुआ, तब मुझे भी उल्लास आया कि ऐसा ग़ज़ब का ज्ञान! ग़ज़ब की सिद्धियाँ उत्पन्न हुई हैं क्योंकि इस वर्ल्ड में ऐसी कोई चीज़ नहीं है कि जिसकी मुझे भीख हो। मान की भीख, लक्ष्मी की भीख, कीर्ति की भीख, विषयों की भीख, शिष्यों की भीख, मंदिर बनवाने की भीख, किसी भी चीज़ की भीख हमें नहीं थी, तब यह पद प्राप्त हुआ है! फिर भी यह 'साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स' हैं। अब इस पद के आधार पर आपको वही दशा प्राप्त हो जाती है। जिनका निदिध्यासन करें उस रूप हो जाते हैं।

प्रश्नकर्ता : दादा, पूर्वजन्म के योग से ही 'अक्रम' मिलता है न?

दादाश्री : यह एक ही साधन है कि जिसके द्वारा मुझसे भेंट हो सकती है। कोटि जन्मों के पुण्य जगें, तब ऐसा योग आ मिलता है।

इन पुण्यानुबंधी पुण्यशालियों के लिए ऐसा मार्ग निकलता है न! प्रत्यक्ष के बिना कुछ भी नहीं हो पाता। 'वीतराग विज्ञान' प्रत्यक्ष के बिना काम में आए वैसा नहीं है और यह तो 'अक्रम विज्ञान' केश बैंक (नकद बैंक)! उसमें तो केश डिपार्टमेन्ट (रोकड़ खाता), केश फल! (यह 'अक्रम मार्ग') वर्ल्ड का आश्चर्य है! दस लाख सालों में निकलता है! लिफ्ट में बैठकर मोक्ष में जा सकते हैं। इसमें ग्रहण या त्याग कुछ भी नहीं होता। यह बिना मेहनत का मोक्षमार्ग है, लिफ्ट मार्ग है। महापुण्यशाली होते हैं, उनके लिए 'यह' मार्ग है। वहाँ पर ज्ञानी मुहर लगाएँ और मोक्ष हो जाता है। 'यह' तो नकद मार्ग है, उधार कुछ भी नहीं रखते। नकद चाहिए, तो 'यह' नकद मार्ग प्रकट हुआ है। दिस इज़ द ऑन्ली कैश बैंक इन द वर्ल्ड!

महापुण्यशाली महात्माओं के लिए अक्रम ज्ञान

ऐसा ज्ञान यह साढ़े तीन अरब की जनसंख्या में किसे नहीं चाहिए? सभी को चाहिए। पर यह ज्ञान सभी के लिए नहीं है। यह तो महापुण्यशालियों के लिए है। यह 'अक्रम ज्ञान' प्रकट हुआ है, उसमें लोगों के कुछ पुण्य होंगे न! सिर्फ एक भगवान पर आसरा रखने वाले, इधर-उधर, भटकने वाले, भक्तों के लिए और जिनके पुण्य होंगे न उनके लिए 'यह' मार्ग निकला है। यह तो बहुत पुण्यशालियों के लिए है और यहाँ सहज ही आ जाएँ और सच्ची भावना से माँगे और उसका पुण्य का पासपोर्ट ले आए, उसे हम ज्ञान दे देते हैं। 'दादा' की कृपा प्राप्त कर गया, उसका काम हो गया!

यहाँ आए हुए सब लोग कितने अच्छे पुण्य लेकर आए हैं! 'दादा' की लिफ्ट में बैठकर मोक्ष में जाना है। कोटि जन्मों के पुण्य जमा होते हैं, तब तो 'दादा' मिलते हैं! और फिर चाहे कैसा भी डिप्रेशन (हताशा) होगा वह चला जाएगा। हर प्रकार से फँसे हुए लोगों के लिए 'यह' स्थान है। अपने यहाँ तो क्रोनिक (असाध्य) रोग मिट गए हैं।

पुण्यानुबंधी पुण्य 'ज्ञानी पुरुष' से भेंट करवा देता है! अब वह पुण्यानुबंधी पुण्य किसे कहा जाता है, कि जिन्हें 'दादा भगवान' मिल जाएँ। करोड़ों जन्मों तक नहीं मिलें वैसे 'दादा', वे बस एक घंटे में हमें मोक्ष दे देते हैं। मोक्ष का सुख

चखाते हैं, अनुभूति करवा देते हैं, कभी ही वे दादा भगवान मिलते हैं, मुझे भी मिल गए और आपको भी मिल गए, देखो न!

प्रश्नकर्ता : हम कहाँ कुछ कमाकर लाए हैं? यह तो आपकी कृपा है।

दादाश्री : पुण्य अर्थात् क्या कि आप मुझे मिल गए, वह आपके साथ कोई हिसाब था उस आधार पर! नहीं तो मुझे मिलना, वह बहुत मुश्किल है। इसलिए मिलना वह आपका पुण्य है एक प्रकार का, और मिलने के बाद आएँ, टिके रहें, तो बहुत ऊँची बात है।

टिकट मिली तो संभालना आखिर तक

प्रश्नकर्ता : दादा, अब महात्माओं का मोक्ष कब होगा?

दादाश्री : एक-दो जन्म या तीन जन्मों के बाद। यह क्षायक समकित है। कोई हिमालय में घूमे, चाहे कहीं भी घूमे लेकिन यह वस्तु प्राप्त नहीं हो सकती। यह तो, जब क्रमिक मार्ग के ज्ञानी होते हैं न, तब वहाँ पर तो तीन या चार ही लोगों को प्राप्ति होती है, ज़्यादा लोगों को प्राप्ति नहीं होती। यह तो अक्रम विज्ञान है। दस लाख सालों में कभी ही प्रकट होता है। तब लाखों लोग ले जाते हैं! उसमें आपको टिकट मिल गई। एक्सेप्शनल (अपवाद) केस, टिकट मिली है यह!

यानी कि करोड़ों जन्मों में भी जो चीज़ प्राप्त नहीं हो सकती, वह आपको आसानी से प्राप्त हो गई है। इसलिए अब इसका रक्षण करना। अन्य किसी चीज़ पर ध्यान मत देना। संसार तो पूरा चलता ही रहेगा। यह कहीं रुकेगा नहीं कभी भी। जैसे कि दाढ़ी बढ़ाने की इच्छा न हो फिर भी बढ़ती रहती है न, उसी प्रकार संसार चलता रहेगा। ऐसी इच्छा हो या न भी हो। और जो स्वभाव है, उस स्वभाव से ही होता रहेगा। उस संसार में फिर, हमें 'यह ऐसा चाहिए या वैसा चाहिए', वहाँ पर ऐसा नहीं चलेगा। अतः इतना संभाल लेना आखिर तक!

प्रश्नकर्ता : जब मैं निजभाव में रहता जाऊँगा, तब फिर अंत में मेरी जो नुकसान की भरपाई होगी तब क्या मुझे ऐसा भास होगा कि अब कुछ पूर्ण हुआ है मेरा?

दादाश्री : उसमें तो आपको ये सांसारिक दुःख या बोझ कम होता जाएगा और आप मुक्त हो ऐसा भान अधिक होता जाएगा। आप मुक्त सुख भोग रहे हो, वह भान और भी अधिक प्रकट होगा। मैं कहता हूँ न, कि सत्ताइस साल से तो मैं मुक्त ही हूँ और विदाउट टेन्शन। यानी कि टेन्शन होता था 'ए.एम.पटेल' को, कोई मुझे नहीं होता था लेकिन 'ए.एम.पटेल' को भी टेन्शन होता है, तब तक हम पर बोझ तो है ही न! वह भी जब खत्म हो जाएगा तब आपको समझना है कि आप छूट गए और फिर भी जब तक शरीर है तब तक बंधन है और उसमें तो अब हमें कोई हर्ज नहीं है। दो जन्म हो जाएँ, तब भी हर्ज नहीं है। हमारा हेतु तो क्या है कि 'यह जो सुख मैंने पाया है, पूरा जगत् वह सुख प्राप्त करे' और आपको जल्दी किस चीज़ की है, वह बताओ। क्या आपको वहाँ पहुँचने की जल्दी है?

मोक्ष की गाड़ी में बैठने के बाद क्या जल्दी?

प्रश्नकर्ता : कभी मोक्ष में जाने की बहुत ही जल्दबाज़ी रहती है!

दादाश्री : यदि जल्दबाज़ी करोगे तो ठोकर खाओगे। मोक्ष मिलने के बाद में मोक्ष की क्या जल्दी? जल्दी किसलिए? कोई आपका रिज़र्वेशन

ले लेगा क्या? रिज़र्वेशन को कोई भी छू नहीं सकता! जिस जगह जाना हो उसका निश्चय, उसकी टिकट, सब कुछ हो चुका है! किसी से पूछ लेना कि गाड़ी कैसी है। तब कहेंगे, स्पीडी (तेज़)। गाड़ी में बैठकर फिर सो जाना है!

कोई व्यक्ति बड़ौदा से मुंबई जाने के लिए गाड़ी में बैठा हो और खिड़की से बाहर देखता रहे, कि मुंबई दिखाई दिया? तो कब अंत आएगा? ये लोग क्या कहते हैं? भाई क्या देख रहे हो? तो कहते हैं, 'दिखाई दे रहा है क्या मुंबई? ज़रा पता लगाओ न?' 'अरे, भाई सो जा न! पागल है क्या?' पत्नी भी ऐसा कहती है कि 'यह मूर्ख है। आपसे कहाँ शादी कर ली मैंने?' कोई ऐसा करता है? अरे, कईं लोग गाड़ी में भागदौड़ करते हैं। क्यों? 'जल्दी पहुँचना है। हमारे रिश्तेदार बहुत बीमार है। सुबह वहाँ से निकलकर अस्पताल जाना है।' अरे भाई, यहाँ पर क्यों भागदौड़ कर रहा है, इस तरह भागदौड़-भागदौड़? अरे बेकार का खुद नहीं सोता और लोगों को भी नहीं सोने देता। अरे भाई, उतरने के बाद वहाँ जाना। सब से पहले तू जाना, लेकिन आराम से सो जा न, अभी।

आज्ञा से प्रगति जल्दी

प्रश्नकर्ता : आप कईं बार ऐसा पूछते हैं कि प्रगति हो रही है या नहीं? तो प्रगति किस जगह पर दिखाई देती है? यानी कि प्रगति में क्या दिखाई देता है? किस तरह से पता चलता है?

दादाश्री : दखल न हो वह। किसी के साथ दखलंदाज़ी न हो या फिर खुद अपने आप के साथ दखल न हो। इतना देख लोगे तो इसका अर्थ है कि प्रगति हुई है। किसी के साथ दखल हो गया तो बिगड़ गया।

प्रश्नकर्ता : आपका ज्ञान प्राप्त करने के पश्चात् हमारी, महात्माओं की जो प्रगति होती है, उस प्रगति की स्पीड (तेज़ी) किस पर आधारित है? क्या करने से तेज़ी से प्रगति होगी?

दादाश्री : पाँच आज्ञाओं का पालन करें तो सब कुछ तेज़ी से होता है और पाँच आज्ञा ही उसका कारण है। पाँच आज्ञा पालन करने से आवरण टूटते जाते हैं, शक्तियाँ प्रकट होती जाती हैं। जो अव्यक्त शक्तियाँ हैं, वे व्यक्त होती जाती हैं। क्योंकि जो निर्मल आत्मा आपको दिया है, वह कभी भी तन्मयाकार नहीं होता है। फिर भी खुद को समझ में नहीं आने से, खुद का व्यक्तित्व छोड़ने से, खुद की 'जगह' छोड़ने से थोड़ा दखल होने से बखेड़ा खड़ा हो जाता है। ''खुद की जगह नहीं छोड़नी चाहिए। 'खुद की जगह छोड़ने से नुकसान कितना है कि, 'खुद का सुख' रुक जाता है और दखल जैसा लगता है। लेकिन 'हमारा' दिया हुआ आत्मा, ज़रा सा भी इधर-उधर नहीं होता, वह तो वैसे का वैसा ही रहता है, प्रतीति के रूप में! पाँच आज्ञा के पालन से ऐश्वर्य व्यक्त होता है। हमारी आज्ञा के प्रति सिन्सियर रहना वह तो सबसे बड़ा, मुख्य गुण कहलाता है।

दूज से पूनम होने के लिए पाँच आज्ञा

इस ज्ञान से तो आपकी दूज हो गई है। अब जैसे-जैसे आज्ञा में रहोगे, वैसे-वैसे फिर पूनम होगी। अनादि की अमावस्या थी न, उसके बजाय दूज तो हुई। दूज का चंद्रमा दिखाई दिया। अब धीरे-धीरे तीज होगी, चौथ होगी। हमारे कहे अनुसार अगर हमारी आज्ञा में रहोगे तो यह सब बढ़ता जाएगा और पूनम होने पर सब संपूर्ण हो जाता है। 'यह' मूल वस्तु प्राप्त हो गई और अंदर आनंद उत्पन्न हुआ है। अब धीरे-धीरे जिस प्रकार दूज का चंद्रमा होता है और उसके बाद पूनम होती है, पूनम और दूज में फर्क तो है न? ये

सारे फेज़ेज़ बदलते रहते हैं। फेज़ेज़ ऑफ द मून। उसी प्रकार इस ज्ञान के फेज़ेज़ हैं। पूनम हो गई तो सब कुछ जानना पूरा हो गया।

प्रश्नकर्ता : पूनम करने की उत्कंठा तो होनी चाहिए न, कि जल्दी से हो जाए!

दादाश्री : जल्दी की बात नहीं है। आपको आज्ञा पालन करते रहना है, बस। आप अधिक आज्ञा पालन करो, उसी के परिणाम स्वरूप पूनम आएगी। इससे तो फिर पूनम भी रूठ जाएगी कि, ओहोहो! देखो, मेरे बिना इन्हें अच्छा नहीं लगता! तेरे बिना सब अच्छा लगता है, तू अपने आप आना बहन (पूनम)! हम तो ये चले, वह अपने आप आएगी। जो पद सामने से आए, उसकी उत्कंठा कैसी? मोक्ष भी सामने आ रहा है और सब कुछ सामने आ रहा है। हमें तो अपने आप, दादा जो कहते हैं उस अनुसार कार्य करते जाना है, बस। अन्य किसी झंझट में नहीं पड़ना है। आगे जाने लगेंगे तो फिर बोझ बढ़ जाएगा। भला फिर उसका बोझ कौन लेगा, बिना कारण?

प्रश्नकर्ता : क्यों दादा, उसके लिए तीव्रता नहीं होनी चाहिए?

दादाश्री : नहीं, तीव्रता तो इन पाँच आज्ञा में रहने के लिए ही रखनी है। वह जो कार्य है, उसके लिए नहीं रखनी है। कारण के लिए तीव्रता रखनी है, कार्य तो फल है। फल के लिए तीव्रता रखकर, लोग कारण में कमज़ोर रह जाते हैं। कार्य बड़ा है या कारण?

प्रश्नकर्ता : कारण बड़ा है, दादा। लेकिन *लक्ष* के लिए तीव्रता के बारे में बताइए।

दादाश्री : वह तो रहेगी ही। वह तो कम होगी ही नहीं।

पटंतर प्राप्त करवाने वाले को सर्वस्व समर्पण

प्रश्नकर्ता : आपने ये जो आज्ञाएँ दी हैं, यह जो जागृति करवाई है, इनमें ब्रह्मांड के भाव समाए हुए हैं। अब इससे आगे कुछ भी कहने को नहीं रहा।

दादाश्री : तमाम शास्त्र, सभी आगम, इनमें आ गए। चौबीस तीर्थंकरों का सम्मिलित विज्ञान है यह!

प्रश्नकर्ता : हमें दिल में जो महसूस हुआ, वह आपको बता दिया साहब!

दादाश्री : जिनके माध्यम से आपने *पटंतर* (जब अज्ञान से मुक्ति पाकर जीव आत्मज्ञान प्राप्त करता है, वह स्थिति) पाया है, उन्हें सर्वस्व समर्पण करने में ज़रा भी नहीं हिचकिचाना चाहिए। सर्वस्व अर्पण कर देना, कहते हैं। जिनके द्वारा आपने *पटंतर* प्राप्त किया है। क्या थे और क्या हो गए! *पटंतर* को जात्यांतर कहा जाता है।

हम जो पाँच आज्ञा देते हैं न, आप जितना उन पाँच आज्ञाओं का पालन करोगे, उतना लाभ होगा। कम पालोगे तो ज़रा कम लाभ रहेगा लेकिन क्रोध-मान-माया-लोभ तो चले ही जाते हैं। निर्बलताएँ चली जाती हैं। यह तो ऐसा है न, कि यह जो ज्ञान प्राप्त हुआ है न, तो पाँच अरब रुपये देने पर भी ऐसा ज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता। पाँच लाख जन्मों में भी नहीं हो सकता, ऐसा एक घंटे में हो जाता है। इस पर टाइम बिगाड़ने जैसा नहीं है। यह विवरण करने जैसी चीज़ नहीं है। दिस इज़ द कैश बैंक ऑफ डिवाइन सॉल्यूशन! कैश बैंक में ऐसा नहीं कह सकते कि आपका चेक कितने बजे आएगा और कितने बजे मुझे पेमेन्ट मिलेगा, ऐसा-वैसा कुछ भी नहीं कह सकते। यह समझ में आ रहा है न? और 'कैश बैंक' कहने

पर आप समझ जाओगे या नहीं समझोगे? क्या लगता है आपको?

मोक्ष होगा ही, उसका आनंद

प्रश्नकर्ता : इस जन्म में तो मोक्ष मिलेगा नहीं तो मोक्ष के लिए कितने जन्म लेने पड़ेंगे?

दादाश्री : वह तो, जितना आज्ञा का पालन करेगा, यदि सत्तर प्रतिशत पालन करेगा तो वह एक ही जन्म में मोक्ष में चला जाएगा। यानी ज़्यादा से ज़्यादा चार और कम से कम एक लेकिन फिर कोई ज़रा सी भी आज्ञा का पालन नहीं करे तो डेढ़ सौ भी हो सकते हैं।

प्रश्नकर्ता : आप कहते हैं न, कि ज्ञान लेने के बाद में किसी को कर्म चार्ज ही नहीं होता, सारा डिस्चार्ज ही होता रहता है। तो सब एक ही जन्म में मोक्ष में जाने चाहिए न?

दादाश्री : हमारी इन आज्ञाओं का जितना पालन करता है न, उतना कर्ताभाव रहता है। अत: उसे लेकर एक या दो जन्म होंगे। जिस प्रकार से आज्ञा का पालन करेगा, उस आधार पर एकाध जन्म कम या ज़्यादा हो सकता है। ज़्यादा से ज़्यादा तीन-चार लगेंगे लेकिन फिर भी जो व्यक्ति ज़्यादा ध्यान न रखे, मेरे बहुत परिचय में न आए तो बहुत हुआ तो उसके पंद्रह जन्म होंगे, किसी के सौ-दो सौ भी हो सकते हैं लेकिन कुछ तो लाभ होगा, उसे। जो मुझसे मिला है न, जो यहाँ चरण स्पर्श कर गया है, उसे लाभ हुए बगैर नहीं रहेगा। जन्म बहुत कम हो जाएँगे लेकिन मुझसे जितना अधिक मिले और सब खुलासे कर लें... मैं ऐसा नहीं कहता कि पूरे दिन यहाँ पड़ा रहे। पाँच मिनट आकर खुलासा कर जा तू। तुझे क्या तकलीफ रहती है? भूलचूक हो जाती है तो हम तुझे दूसरी चाबियाँ दे देंगे और भूलचूक सुधार देंगे। क्योंकि एक घंटे की ज्ञानविधि से फंडामेन्टल (मूलभूत ज्ञान) प्राप्त होता है। उसके बाद विस्तारपूर्वक जान लेना चाहिए न! डॉक्टर बनना हो, तो उसमें भी टाइम तो लगाते हो न? कॉलेज में पढ़ते हुए पच्चीस-पच्चीस साल का टाइम बिता देते हैं, तो इसके लिए कुछ तो क्वॉलिफिकेशन (योग्यता) चाहिए न?

प्रश्नकर्ता : तो दादा, क्या ऐसा होता है कि मोक्ष मिलने में विलंब होगा? दो जन्म के बदले चार जन्म हो जाएँगे ऐसा हो सकता है?

दादाश्री : ऐसा होता है, तब भी हर्ज क्या है?

प्रश्नकर्ता : लेकिन जल्दी जाना है। बीच में कहीं फँस जाएँ तो?

दादाश्री : एक संत पुरुष ने नारद जी से कहा था... 'नारद जी, पूछ आए भगवान से कि उनका मोक्ष होगा?' तब नारद जी ने बताया, 'हाँ, भगवान ने कहा है कि मोक्ष होगा। यह जिस इमली के पेड़ के नीचे बैठे हो, उसके जितने पत्ते हैं उतने जन्म होंगे और उसके बाद आपका मोक्ष हो जाएगा'! 'होगा ज़रूर, कहा है न, इतना बहुत हो गया।' तो फिर मोक्ष हो जाएगा, उसके आनंद में बहुत नाचे, खूब नाचे। तो महत्व इस बात का है कि मोक्ष होगा ही। कब होगा, वह बाद में देख लेंगे। बाकी, यहीं पर मोक्ष हो जाना चाहिए। यह तो अक्रम विज्ञान है, एकावतारी विज्ञान है। इसके बाद एक ही जन्म बाकी रहता है। किसी के दो जन्म भी हो सकते हैं, किसी के तीन जन्म भी हो सकते हैं।

प्रश्नकर्ता : लेकिन यदि सीढ़ियाँ उतर जाएँगे तो और अधिक जन्म लग जाएँगे न?

दादाश्री : 'दादा, दादा' करते हुए आगे

चलते जाना। किसी बात का भय नहीं रखना है कि ऐसा हो जाएगा तो क्या होगा?

प्रश्नकर्ता : हर एक जन्म में मोक्ष का *लक्ष* तो रहेगा ही न?

दादाश्री : अब बहुत कहाँ होने हैं? *लक्ष* तो साथ में रहेगा ही न! मोक्ष स्वरूप ही रहना है।

प्रश्नकर्ता : जिन्होंने ज्ञान लिया है, उनकी दो-पाँच जन्मों में मुक्ति तो हो जाएगी न?

दादाश्री : हाँ, लेकिन ज्ञान के साथ आज्ञा का पालन करें तो। यदि आज्ञा का पालन नहीं करेंगे तो ज़्यादा जन्म हो जाएँगे। आज्ञा की ही कीमत है, ज्ञान की कीमत नहीं है। आज्ञा ही हम हैं और आज्ञा का पालन किया तो हम साथ ही रहते हैं।

आज्ञा पालन से निर्विकल्प समाधि

प्रश्नकर्ता : आज्ञा चूक गए हैं, उसका कोई मापदंड है?

दादाश्री : भीतर सफोकेशन, घुटन होती है। वह आज्ञा चूकने का ही परिणाम है। आज्ञा वालों को तो समाधि ही रहती है, निरंतर। जब तक आज्ञाएँ हैं, तब तक समाधि। अपने मार्ग में कई ऐसे लोग हैं जो अच्छी तरह से आज्ञा पालन करते हैं और समाधि में रहते हैं। क्योंकि ऐसा सरल और समभावी मार्ग, सहज जैसा! और यदि यह अनुकूल नहीं आया तो फिर वह (क्रमिक) तो अनुकूल आएगा ही कैसे? अत: सभी झंझटों को छोड़कर, मन की झंझटों पर ध्यान ही नहीं देना चाहिए। सिर्फ ज्ञाता-ज्ञेय का संबंध ही रखो। मन अपने धर्म में है, उसमें दखल देने की क्या ज़रूरत है? निरंतर आज्ञा में रह पाएँ, समाधि में रह पाएँ, ऐसा मार्ग है। ज़रा भी कठिन नहीं है, आम वगैरह खाने की छूट!

प्रश्नकर्ता : ज्ञानी के आश्रय में आने के बाद जो भी कमी रहती है, तो उसे खुद की समझनी चाहिए या सामने वाले की समझनी चाहिए? हमें तो ऐसा लगता है कि हम आज्ञानुसार रहते हैं, लेकिन उसमें किस तरह का फर्क रह जाता है?

दादाश्री : फर्क रह जाता है न, इसलिए फिर आप पर सारी *उपाधियाँ* (मुसीबतें) आती रहती हैं। आपको अरुचि होती है, ऊब जाते हो, ऐसा सब होता है। फर्क रह जाने पर ऐसा हो जाता है, वर्ना यदि हमारी आज्ञा में रहें न, तो फिर समाधि नहीं जाएगी। इस ज्ञान का प्रताप ऐसा है कि अखंड शांति रहती है और एक-दो जन्मों में मुक्ति मिल जाती है।

इतने सारे जंजालों में भी आप महात्माओं को यहाँ पर निर्विकल्प समाधि प्राप्त हो जाती है। देह और आत्मा दोनों बिल्कुल अलग-अलग ही रहते हैं, कभी तन्मयाकार नहीं होते। फिर चाहे कोई भी अवस्था हो, उसे कहते हैं निर्विकल्प समाधि।

अब, काम निकाल लो

अब नि:शंक हुए हो, अब आज्ञा में रहो। बुढ़ापा निकाल दो। यह शरीर चला जाए तो भले जाए, कान काट लें तो काट लें, *पुद्गल* को फेंक ही देना है न। *पुद्गल* पराया है। पराई चीज़ है, अपने पास नहीं रहेगी। वह तो जब उसका टाइम आएगा, व्यवस्थित का टाइम आएगा, उस दिन जब भी होगा तब ले जाएगा। उसका भय नहीं रखना है। आपको कहना है, 'ले जाओ'। इसका अर्थ यह नहीं कि कोई फालतू बैठा है ले जाने के लिए लेकिन उससे आप में निर्भयता रहेगी। 'जो होना हो वह हो', कहना।

ऐसा है, यह चंदूभाई नामक शरीर, हमारे

लिए महामित्र समान हो गया है क्योंकि इस शरीर में रहते आपने अक्रम ज्ञानी को पहचाना है और आपको अक्रम ज्ञान प्राप्त हुआ है और वह अनुभव में सिद्ध हुआ है। इसलिए अब इस शरीर से कहना कि 'हे मित्र, तेरा जो इलाज करना होगा, वह मैं करूँगा। अगर हिंसक इलाज होगा तो वह भी करूँगा लेकिन तू रहना।' ऐसी आपकी भावना होनी चाहिए। यह शरीर ही नहीं, ऐसे बहुत सारे शरीर चले गए, सभी शरीर व्यर्थ ही गए हैं न! अनंत जन्मों से शरीर व्यर्थ ही गए हैं लेकिन इस शरीर ने तो आपको यथार्थ फल दिखाया है न! और चंदूभाई के नाम पर दिखाया है न! अत: इस शरीर का ध्यान रखना और अब काम निकाल लो।

अलग ही रहेंगे अगले जन्म में

प्रश्नकर्ता : हमने ज्ञान लिया है तो हमें मृत्यु के समय क्या करना चाहिए?

दादाश्री : ज्ञाता-द्रष्टा रहना है। आपके अंदर जो कुछ भी चल रहा हो, उसे देखते ही रहना। वैसा नहीं रह पाए तो दादा की पाँच आज्ञा में रहना रिलेटिव-रियल को देखते रहना है।

प्रश्नकर्ता : जब हमारी मृत्यु होगी तब हमारे साथ एक्ज़ेक्टली क्या आएगा, जितना चित्रण किया गया है, वह?

दादाश्री : शुद्धात्मा हो गए, उसके बाद आपके साथ अन्य कुछ भी नहीं आएगा। इस जन्म के माल-सामान में से सिर्फ एक-दो थैले साथ में आएँगे। जैसे कि ये साधु लोग एक-दो थैले नहीं रखते? घर-बार कुछ भी नहीं। यानी कि अंत में दो थैले रहेंगे, एक जन्म के लिए।

प्रश्नकर्ता : अभी तो ढेर सारे गोडाउन हैं।

दादाश्री : भले ही ढेर लगा हो लेकिन वह ढेर 'फॉरेन' का है न, आप अपना क्यों मानते हो? आपके 'होम' का है ही नहीं। उस भार को ही छोड़ दो। भार छोड़कर सो जाओ, आराम से! आपको देख लेना है कि ये सब सो गए हैं तो आप भी सो जाओ!

प्रश्नकर्ता : दादा, आपने हम में जो अलग कर दिए हैं आत्मा और शरीर, वे एक नहीं हो जाएँगे न?

दादाश्री : अलग ही रहेंगे।

प्रश्नकर्ता : अगले जन्म में जाएँगे तब भी?

दादाश्री : हाँ। यहाँ से यदि बंधन सहित गया हो तो वहाँ बंधन सहित ही रहेगा और यहाँ से मुक्त होकर गया हो तो वहाँ पर भी मुक्त ही रहेगा।

मृत्यु की वेदना के समय

प्रश्नकर्ता : जिस समय व्यक्ति मृत्यु शैया पर होता है, उस समय उसे एक हज़ार बिच्छुओं की वेदना होती है तो उस समय यह ज्ञान रहता है या नहीं रहता?

दादाश्री : यह ज्ञान हाज़िर रहता ही है। मरते समय निरंतर समाधि देगा। जो अभी भी समाधि देता है, वह ज्ञान मरते समय तो हाज़िर रहेगा ही। अर्थात् मृत्यु के समय पूरी ज़िदगी का सार हाज़िर हो जाता है।

प्रश्नकर्ता : नसें खिंच रही होती हैं, नाड़ियाँ टूट रही होती हैं...

दादाश्री : उसमें हर्ज नहीं है। नसें चेतना रहित हो जाएँ न, फिर भी उसे अंदर ध्यान रहता है, शुक्लध्यान छोड़ता नहीं है न! एक बार उत्पन्न

हो जाने के बाद फिर छोड़ता नहीं है। अभी भी चिंता नहीं होने देता न?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : तो जो ध्यान चिंता नहीं होने देता, ऐसा वर्ल्ड में कभी भी हुआ नहीं है, वैसी चीज़ आज हुई है। तो क्या वह आपको मरते समय छोड़ देगा? 'मैं शुद्धात्मा हूँ', ऐसा भान रहे तो उसे समाधि मरण कहा जाता है। फिर चाहे शरीर को कितनी भी पीड़ा हो रही हो, वह नहीं देखना है। अर्थात् जागृत रहता है, उस समय।

महात्माओं को अंत समय में संभालेंगे दादा

प्रश्नकर्ता : क्या महात्माओं को पता चल सकता है कि मृत्यु कब होनी है? यदि वह आपकी सभी आज्ञा का पालन करता है और ज्ञाता-द्रष्टा रहता है तो क्या उसे ऐसा पता चल सकता है कि उसका अंत समय आ गया है?

दादाश्री : पता चलता है। यदि नहीं चले तो भी हर्ज नहीं है। लेकिन ऐसे में अंत तक दादा संभाल लेंगे। इसलिए चिंता मत करना। इतना करने वाले को दादा हर प्रकार से संभाल लेंगे।

प्रश्नकर्ता : उस समय कोई अनुभव होता है?

दादाश्री : अनुभव हो ही जाएगा न! आत्मा में ही रहेगा, उस क्षण। अंतिम एक घंटे आत्मा में ही रहेगा, बाहर निकलेगा ही नहीं क्योंकि बाहर का वातावरण भयानक लगेगा।

प्रश्नकर्ता : दादा की भक्ति करने में जिस शरीर ने साथ दिया है और दे रहा है तो अंतिम समय में, देह छोड़ते समय अंतिम घड़ी में दादा हाज़िर रहें, ऐसा भाव करता हूँ। प्रभु! मुझे ऐसा देना।

दादाश्री : जब कोई स्टीमर डूब रहा हो, तब उस स्टीमर की ममता छोड़ देते हैं या नहीं छोड़ देते? स्टीमर डूब रहा हो तो एक तरफ कहते हैं कि 'चलो, सभी पैसन्जर्स, इन नावों में उतर जाओ। कुछ भी साथ में मत लेना'। हाथ में वज़न मत लेना।' तब ममता छोड़ देते हैं न! नहीं छोड़ते? या फिर उस स्टीमर में ही बैठे रहते हैं? अरे फिर यदि ऐसा कहें कि 'हर एक परिवार में से सिर्फ दो ही लोग लेने हैं!' तो अपने बच्चों को जाने देता है या वह बूढ़ा खुद जाता है? नहीं जाने देता। यों क्या कोई किसी और को जाने देता है? वह तो सभी को हटाकर, उसे न जाने दे रहे हों, फिर भी चला जाता है न? अरे, सभी को धक्के मारकर चला जाता है। सारी ममता छोड़ देने की शर्त पर मुझे जीवित रखो। तो मरते समय ऐसे खेल होते हैं! अपने ज्ञान वाले तो अंदर आत्मा में घुस जाते हैं न, फिर हमें कहें कि 'बाहर निकलो न!' तब कहते हैं 'नहीं, भाई। मुझे अब कुछ नहीं चाहिए।' इसे समाधि मरण कहा जाता है। बाहर शरीर में उं..उं... हो रहा होता है और अंदर खुद समाधि में रहता है। अंतिम घड़ी में इतना अधिक आज्ञा में रहता है। इसलिए किसी को कोई चिंता नहीं करनी है।

महात्माओं को होगा समाधिमरण

मृत्यु के समय पूरी तरह से आत्मा की गुफा में ही घुस जाता है, बाहर रहता ही नहीं है, खड़ा ही नहीं रहता न! वह उसका मुख्य गुण है। चारों तरफ से जब बहुत परेशानी हो, तब गुफा में घुस जाता है। यह सब से बड़ा गुण है। जबकि बाकी सभी को, जिन्हें ज्ञान न हों उनके पास गुफा तो होती ही नहीं, तो फिर उसमें जाएँगे कैसे?

चंदूभाई से अलग रहना चाहिए आपको। चंदूभाई अलग और आप अलग। अपना विज्ञान

तो ऐसा है जो कि स्थिर रखता है। बहुत परेशानी आए, तब वह गुफा में घुस जाता है।

मुझसे पूछते हैं कि 'दादा, मरते समय समाधि मरण होगा?' तो मैंने बताया, 'अभी समाधि रहती है तो उस समय तो और भी अधिक भय होता है अत: सब अंदर अपने घर में ही घुस जाएँगे। बाहर निकलेंगे ही नहीं न!' अत: समाधि मरण ही होगा।

मृत्यु का भय नहीं, वहाँ हैं 'मोक्ष के वीज़ा'

यह तो अद्‌भुत ज्ञान दिया है। रात को जब जागो तब हाज़िर हो जाता है कि, 'मैं शुद्धात्मा हूँ।' आप जहाँ कहोगे वहाँ हाज़िर हो जाएगा। बहुत परेशानी आ जाए तो निरंतर जाग्रत रहेगा। बहुत बड़ी परेशानी आ जाए और उससे भी बड़ी परेशानी आ जाए, बम गिरने लगें तो फिर (शुद्धात्मा की) गुफा में घुस जाएगा। केवलज्ञानी जैसी दशा हो जाएगी। बाहर बम गिरने लगें तो केवलज्ञानी जैसी दशा हो जाएगी, ऐसा ज्ञान दिया है।

प्रश्नकर्ता : केवलज्ञान अर्थात् क्या?

दादाश्री : उसका अनुभव होने के बाद में फिर आप पर किसी भी चीज़ का असर नहीं होगा। पैकिंग और आत्मा, दोनों अलग ही दिखाई दें, वह है केवलज्ञान। केवलज्ञान अर्थात् केवल आत्मा ही, अन्य कोई भी चीज़ में मैंपन नहीं। मैंपन निरंतर किसमें? आत्मा में ही। आत्मा, वह ज्ञानस्वरूप है और ज्ञान में ही मैंपन। आत्मा, जिसे 'शुद्ध चैतन्य' कहा जाता है, वह कोई चीज़ नहीं है, मात्र केवलज्ञान है। सिर्फ ज्ञान ही है, केवलज्ञान ही है।

किसी भी संयोग में भय न लगे, चाहे कैसे भी एटम बम डाले, चाहे वैसा कुछ भी हो जाए लेकिन भय नहीं लगे। बिल्कुल भी विचलित न हो जाए, तब समझना कि विज्ञान पूर्ण प्राप्त हो गया है। या फिर जिसने ऐसा लक्ष्य बनाया हो कि, किसी भी संयोग में मुझे भय नहीं लगना चाहिए और उस रास्ते पर चलता है, उस व्यक्ति में विज्ञान पूर्ण होने की तैयारी है।

यदि यहीं पर मरना पड़े लेकिन भय नहीं लगे तो समझना कि अब मोक्ष का 'वीज़ा' मिल गया! किसी भी प्रकार से भय नहीं लगना चाहिए क्योंकि जहाँ मालिक ही आप हो, वहाँ भय किसका? मालिक हो, दस्तावेज हैं, टाइटल है, सभी कुछ आपके पास है लेकिन आपको पता नहीं है तो फिर क्या हो सकता है?

एटम बम गिरने वाला हो, फिर भी एटम बम डालने वाला डरेगा लेकिन जिस पर गिरने वाला है, वह नहीं डरेगा। इतना अधिक शक्तिशाली विज्ञान है यह!

अंत समय में दादा निरंतर हाज़िर

प्रश्नकर्ता : मरते समय दादा हाज़िर रहेंगे?

दादाश्री : हाँ, हाज़िर तो, वास्तव में हाज़िर रहेंगे। (दादा) अन्य दिनों में भी हाज़िर रहते हैं न? पूरे दिन रहते हैं! तो फिर हो चुका! पूरे दिन हाज़िर रहते हैं, ऐसा कहते हैं न! यों भी हमेशा हाज़िर रहते हैं तो क्या मरते समय नहीं रहेंगे?

अत: आपको बहुत नहीं सोचना है कि दादा हाज़िर रहना। इस प्रकार से दादा से विनती भी नहीं करनी है।

अनंत जन्मों तक मरे हैं लेकिन सभी मरण कु-मरण थे, समाधि मरण नही हुआ था और अब समाधि मरण होगा। क्योंकि जब कोई सांसारिक तकलीफ आती है, तब तू चंदू के रूप में रहता है या आत्मा हो जाता है?

प्रश्नकर्ता : आत्मा हो जाता हूँ।

दादाश्री : हाँ, तो कोई मृत्यु जैसी आफत आ जाए, उस घड़ी अंदर आत्मा हो ही जाता है! आफत आई कि बाहर खड़ा नहीं रहता, होम में (आत्मा में) घुस जाता है। वही है समाधि मरण। संसार का अंतिम स्टेशन क्या होना चाहिए? समाधि।

प्रश्नकर्ता : क्या महात्माओं की मृत्यु समाधि में ही होगी?

दादाश्री : हमारी आज्ञा का पालन करेगा तो हम हाज़िर रहेंगे और समाधि मरण होगा।

प्रश्नकर्ता : अर्थात् (जब) समाधि मरण होता है, उस समय हम आत्मा में रहते हैं?

दादाश्री : हाँ, समाधि मरण अर्थात् 'खुद के स्वरूप' के अलावा बाकी कुछ भी याद न रहे। मन-बुद्धि-चित्त-अहंकार कुछ भी हाज़िर न रहे। आत्मा में ही रहे।

समाधि मरण, उस समय आत्मा में रहते हैं! महात्माओं की अंतिम घड़ी में तो दादा निरंतर हाज़िर रहेंगे!

अगले जन्म में यह 'ज्ञान' रहेगा?

प्रश्नकर्ता : यह जो ज्ञान लिया है यह अगले जन्म में भी रहेगा या फिर से लेना पड़ेगा?

दादाश्री : रहेगा। कोई ज्ञान चला नहीं जाता। यह ज्ञान भी नहीं चला जाएगा और अन्य कोई ज्ञान ले आओगे तो वह भी नहीं जाएगा। ज्ञान सब जगह रहेगा ही, जहाँ जाओ वहाँ।

प्रश्नकर्ता : अभी एक या दो जन्म बाकी बचे हैं, उसमें यह आत्मा का ज्ञान रहेगा?

दादाश्री : बाकी सारा ज्ञान तो अभी भूल गए हो न, वह साथ में नहीं आएगा। जिस ज्ञान में हो वही ज्ञान साथ में आएगा। जिस स्टैन्डर्ड (कक्षा) में हो, उसी स्टैन्डर्ड से आपका वहाँ शुरू हो जाएगा। अत: यही सब रहेगा। आज यहाँ हैं और कल जो होंगे, उसमें फर्क नहीं है ज़रा भी। इतना ही है कि सिर्फ यह शरीर बदलेगा। अन्य स्थिति वैसी की वैसी ही। और अगर अभी चोर, बदमाश होगा तो उसे भी यहाँ पर जैसा है, वैसे का वैसा वहाँ भी रहेगा! अत: वहाँ पर कोई कुछ ले नहीं लेगा। यह ज्ञान हाज़िर रहेगा। तभी तो मोक्ष में जा पाओगे न! वर्ना मोक्ष में कैसे जा पाओगे? और भूतकाल आपको याद नहीं रहता है, वह तो बहुत ही बड़ी चीज़ है! और भविष्य काल जो है, वह व्यवस्थित के ताबे में है। अत: आपको वर्तमान काल में रहना है।

प्रश्नकर्ता : दादा, अभी आप जो समकित देते हैं, ज्ञान देते हैं, तो यह आखिर में मोक्ष जाने तक कायम रहेगा?

दादाश्री : यह, मोक्ष हो ही गया है, अब अन्य कोई (मोक्ष) लेने को रहा ही कहाँ? पहले अज्ञान से मुक्ति होती है। उसके बाद जब कर्म खत्म हो जाते हैं, तब दूसरी मुक्ति।

प्रश्नकर्ता : लेकिन अगले जन्म में ज्ञान लेना पड़ेगा?

दादाश्री : नहीं, यह ज्ञान तो साथ में ही रहेगा। यह ज्ञान जो प्राप्त हुआ है न, यही ज्ञान साथ में आएगा।

प्रश्नकर्ता : बीच में, कुछ जन्मों के बाद यदि छुटकारा होना ही है तो फिर बाद के जन्मों में भी यह स्थिति चलती रहेगी क्या?

दादाश्री : स्थिति तो, यहाँ पर निन्यानवे

तक पहुँचे हों, तो निन्यानवे से फिर से आपका शुरू हो जाएगा। इन भाई का इक्यासी तक हो तो इक्यासी से शुरू होगा।

प्रश्नकर्ता : तो क्या अगले जन्म में भी कर्म बंधन न हों, वैसी स्थिति जारी ही रहेगी?

दादाश्री : वही स्थिति जारी रहेगी। जो ज्ञान आप लेकर आए हो न, वह तो यहाँ पर अंतिम स्थिति के समय, मृत्यु के समय भी हाज़िर रहेगा और फिर अगले जन्म में वहाँ पर भी हाज़िर रहेगा।

प्रश्नकर्ता : अब अगला जन्म होगा, उस समय क्या हमें यह ज्ञान याद आ जाएगा?

दादाश्री : उसके लिए तो सारे निमित्त मिल जाएँगे। निमित्त के बिना तो नहीं हो सकता। निमित्त मिल जाएँगे, लेकिन वह सिर्फ ज्ञान का निमित्त नहीं। वह तो कोई उल्टा निमित्त भी मिल सकता है। उल्टा निमित्त मिलेगा तो ज्ञान हाज़िर हो जाएगा। कोई उल्टा करने वाला, परेशान करने वाला मिल जाएगा, तो आप सोचने लगोगे, सोचते हुए ज्ञान की लाइट हो जाएगी। या फिर कोई साधु-महाराज के पास बातें सुनने गए हों तो वहाँ पर जब महाराज बात कर रहे हों तब मन में ऐसा विचार आए कि ऐसा नहीं हो सकता, ऐसा होना चाहिए। तब वह ज्ञान हाज़िर हो जाएगा और लाइट हो जाएगी। अर्थात् निमित्त मिलने के बाद ज्ञान हाज़िर हो जाता है।

प्रश्नकर्ता : ये जो बाकी के एक-दो जन्म बचे हैं, उनमें यह जागृति और यह मार्गदर्शन...

दादाश्री : वह सब तो साथ में रहेगा। यह जागृति, यह ज्ञान सब कुछ यहाँ से जैसा छूटा हो, वैसा ही वहाँ पर हाज़िर हो जाएगा। बचपन से ही ऐसा कुछ होगा कि लोगों को आश्चर्य होगा। इसीलिए कृपालुदेव इतनी कम उम्र में भी लिख पाए थे न, सब। यदि ज्ञान हाज़िर नहीं होता हो तो इतनी कम उम्र में नहीं कर पाते।

प्रश्नकर्ता : अभी इस जन्म में अक्रम मिला है और बाद के जन्मों में फिर क्रमिक में जाना पड़ेगा या अक्रम ही रहेगा?

दादाश्री : फिर रहा ही नहीं न! आत्मा प्राप्त हो गया तो हो गया, खत्म! फिर चाहे कुछ भी हो, सब *निकाली* है। अक्रम मिले या क्रमिक मिले, उससे हमें लेना-देना नहीं है। अपना यह ज्ञान हाज़िर ही रहेगा, अंतिम एक-दो जन्मों तक।

प्रश्नकर्ता : दादा, इस जन्म में तो आपका ज्ञान मिला है और आज्ञाएँ भी मिली हैं तो अब अगले जन्म में कोई ये आज्ञाएँ देगा या हम यहाँ से लेकर ही जाएँगे या फिर क्या होगा?

दादाश्री : ये आज्ञाएँ इस जन्म के लिए ही हैं। फिर इससे आगे तो आज्ञा आपके जीवन में उतर चुकी होंगी, आपको पालन नहीं करनी पड़ेगी। इस जन्म तक ही आपको पालन करनी होंगी। अच्छी तरह पालन करोगे तो अगले जन्म में आपके अदंर ही उतर चुकी होंगी। आपका वह जीवन ही आज्ञापूर्वक होगा!

प्रश्नकर्ता : तो अगले जन्म में भी अभी की फाइलें वापस साथ में आएँगी?

दादाश्री : यदि फाइलों से कलह की होगी तो साथ में आएँगी और अगर नहीं की होंगी तो नहीं आएँगी।

जाएँगे महाविदेह क्षेत्र में

जिसे यहाँ पर शुद्धात्मा का *लक्ष* बैठ गया है, वह यहाँ पर इस भरत क्षेत्र में रह ही नहीं सकता। वह सहज रूप से महाविदेह क्षेत्र में खिंचा

चला जाए, ऐसा नियम है। यहाँ पर इस दूषमकाल में रह ही नहीं सकता। जिन्हें शुद्धात्मा का *लक्ष* नहीं हैं, वे सब तो यहाँ पर हैं ही लेकिन जिसे *लक्ष* बैठ गया है, वह महाविदेह में एक जन्म या दो जन्म लेकर तीर्थंकर के दर्शन करके मोक्ष में चला जाएगा, ऐसा आसान और सरल मार्ग है यह!

प्रश्नकर्ता : हमें यदि महाविदेह क्षेत्र में जन्म लेना है तो वह मिल सकता है क्या?

दादाश्री : हाँ, क्यों नहीं मिलेगा? सब फोर्थ वालों को ही फिफ्थ में बैठाते हैं न? जो पास हो जाएँगे, उन्हें। इसी तरह एक जन्म, यहाँ से क्षेत्र स्वभाव लेकर जाता है व्यक्ति को। यानी कि चौथे *आरे* के लायक स्वभाव हो जाए तो फिर जहाँ पर चौथा *आरा* चल रहा हो, वहाँ पर वह क्षेत्र उसे खींच लाना है और यदि चौथे *आरे* में पाँचवें *आरे* के लायक जीव हों तो उन्हें यह पाँचवाँ *आरा* (काल चक्र का बारहवाँ हिस्सा) वहाँ से खींच लेता है। अत: आपको सीमंधर स्वामी के पास बैठने को मिलेगा और वहाँ पर आपको यह प्राप्ति हो जाएगी। वहाँ अंतिम दर्शन हो जाएँगे। हमारे दर्शन से भी उच्च प्रकार के दर्शन हैं वे। हम तीन सौ छप्पन डिग्री पर हैं, उनकी तीन सौ साठ डिग्री हैं। अत: वहाँ पर वे दर्शन होंगे। उस दर्शन की ही ज़रूरत है अब, यानी कि उसमें सब आ जाता है। वे दर्शन हो जाएँगे तो मोक्ष हो जाएगा।

आज्ञा पालन से पहुँचेंगे स्वामी के पास

और पुण्य बंधन ऐसा होगा कि वहाँ पर मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। वहाँ पर तो तैयार बंगले व गाड़ियाँ होंगी, वहीं पर जन्म होगा और वहाँ पर फिर वे भगवान के पास छोड़ने आएँगे गाड़ियों में। इससे ऐसा पुण्य बंधन होगा। ये हमारी आज्ञा पालन करने से पुण्यानुबंधी पुण्य का बंधन होगा। ज़रा भी मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। यहाँ तो धक्का-मुक्की, इसे भी कहीं जीवन कहते हैं? इसे क्या पुण्य कहते हैं? वहाँ पर तो जैसे ही सोचा कि, 'प्रभु के पास जाने का टाइम हो गया', तो वह घड़ी में देखे, उससे पहले तो गाड़ी आकर खड़ी हो जाएगी! यानी इस तरह से सारी तैयारियाँ रहेंगी आगे। अत: अब आप हमारी आज्ञा का पालन करना तो निरंतर समाधि रहेगी, उसकी गारन्टी देता हूँ। महाविदेह क्षेत्र में से वापस आ नहीं सकते न! वापस आने का रास्ता ही नहीं है न! राग-द्वेष करेंगे तभी वापस आने की शुरुआत होगी।

कर्मों के धक्के से जन्म होंगे, एक-दो जन्म हो सकते हैं शायद लेकिन अंत में फिर सीमंधर स्वामी के पास ही जाना पड़ेगा। यहाँ पर जो हिसाब बाँधा हुआ होगा न, पहले के कुछ गाढ़ हिसाब बंध गए होंगे तो वे खत्म हो जाएँगे।

प्रश्नकर्ता : यहाँ पर?

दादाश्री : कोई चारा ही नहीं है न! यह तो रघा सुनार का तराजू है, ज़बरदस्त न्याय है! शुद्ध-प्योर न्याय! यहाँ पर चलती ही नहीं न गड़बड़।

निष्पक्षपाती रूप से देखें तो पता चले

प्रश्नकर्ता : हम मोक्ष में जाने वाले हैं, ऐसा कैसे पता चलेगा?

दादाश्री : नहीं, उसकी जल्दी भी क्या है आपको?

प्रश्नकर्ता : नहीं, जल्दी तो नहीं है लेकिन पता तो चलना चाहिए न, कि कब जाएँगे, दस जन्म बाद, बीस जन्म बाद, सौ जन्म बाद...

दादाश्री : सब पता चलेगा। अपना आत्मा है

न, वह थर्मामीटर जैसा है। भूख लगने पर पता नहीं चलता? जब संडास आने वाली हो तब आपको पता चल जाता है या नहीं? सब पता चलता है। कहाँ जाना है, वह सब भी पता चलता है। कौन सी योनियों में जाना है, वह भी पता चलता है। निष्पक्षपाती रूप से देखता नहीं है।

प्रश्नकर्ता : उस स्टेज पर आना पड़ेगा न?

दादाश्री : नहीं, लेकिन वह आत्मा उस स्टेज वाला ही है। निष्पक्षपाती रूप से देखना है। साथ-साथ हमें पक्षपात में नहीं पड़ना चाहिए। संडास जाना हो उसका हमें अंदर तो तुरंत पता चल जाता है न, लेकिन साथ-साथ पक्षपात का अर्थ क्या है? अपने यहाँ कोई सोने का व्यापारी आया हो न, उसके साथ बातें करने में लगे रहें तो फिर क्या होता है? सोने के प्रति वह पक्षपात होने पर, यह थर्मामीटर जो कि संडास जाने का दिखा रहा होता है, वह फिर बंद हो जाता है। वर्ना यदि पक्षपात नहीं हो न, तो आत्मा थर्मामीटर ही है, सब कुछ दिखाए ऐसा है।

तीर्थंकर के दर्शन से मोक्ष

प्रश्नकर्ता : आप तो हमें मोक्ष की गारन्टी देते हैं, लेकिन जब मोक्ष में जाएँगे तब वहाँ पर आप भी मोक्ष में होंगे न, तब दादा को कैसे पहचानेंगे?

दादाश्री : उसके बाद पहचानने की क्या ज़रूरत है? यहाँ पर तो जान-पहचान वाले हों तो उपकार मानना पड़ता है। वहाँ मोक्ष में तो परिचय ही नहीं रहता। यानी वही ठीक है क्योंकि मोक्ष में समानता है। मोक्ष किसे कहा जाता है? मोक्ष अर्थात् कोई *ऊपरी* नहीं और कोई अन्डरहैन्ड नहीं।

यहाँ पर मोक्ष क्यों नहीं होता? तब कहते हैं, मेरे *ऊपरी,* ऐसे तीर्थंकर यहाँ पर होते तो सिर्फ दर्शन करते ही मोक्ष हो जाता। इस हद तक की तैयारी है अपने यहाँ। सिर्फ दर्शन ही, तीर्थंकर मिल जाते और दर्शन हो जाते तो अंदर पूर्णाहुति हो जाती लेकिन यहाँ पर हैं नहीं, अब किसके दर्शन करवाएँ? मूर्ति तो चलती नहीं। अत: वहाँ जाने के बाद सिर्फ दर्शन करने से ही मोक्ष है।

भटक कौन सकता है?

प्रश्नकर्ता : सभी महात्मा कहते हैं कि हम महाविदेह क्षेत्र में जाएँगे न?

दादाश्री : कईं लोगों को यहाँ आकर फिर एकाध जन्म बाद जाना होगा। अंदर कुछ हिसाब बाँधा हो तो वह चुका देना पड़ेगा न! लेकिन जाएँगे वहाँ। हिसाब तो चुकाना ही पड़ेगा। यह ज्ञान लेने से पहले बीच में एकाध कोई ऐसा खराब कर्म बाँध दिया हो तो उसका दंड तय हो गया है, उस दंड को तो भुगतना ही पड़ेगा न! भुगत लेने के बाद वह छूट जाएगा। जन्म अर्थात् दंड।

प्रश्नकर्ता : तो क्या ज्ञान लेने के बाद कोई हमेशा के लिए भटक सकता है?

दादाश्री : भटक सकता है न! ज्ञान परिणामित नहीं हुआ हो तो फिर उसका अर्थ ही नहीं रहा न! उल्टा चले, उल्टा ही। सभी का उल्टा ही बोलता रहे तो?

प्रश्नकर्ता : उल्टा यानी कैसा?

दादाश्री : कोई उल्टा बोले यानी कि आपकी बात निकली हो तो इतना-इतना उल्टा बोल देते हैं। क्या ऐसे लोग नहीं होते?

प्रश्नकर्ता : तो क्या ज्ञान की विराधना करते हैं वे?

दादाश्री : ज्ञान की और ज्ञानी की और

ज्ञानी के फॉलोअर्स की और सभी की विराधना करते हैं। पुस्तकों की और सभी की। 'ये पुस्तकें मेरे हाथ में आएगी तो फेंक दूँगा', ऐसा कहते हैं। फिर तो उनकी पुस्तकों की विराधना करता है। यों पुस्तकें फेंक देता है, 'चल हट! अगर ये किताबें लाया तो समुद्र में फेंक दूँगा, नहीं तो जला दूँगा।' फोटो की विराधना कर देता है, जला देता है फोटो।

प्रश्नकर्ता : जिसने ज्ञान लिया है, उसकी बात है?

दादाश्री : हाँ, वह सब तो बदल सकता है न!

प्रश्नकर्ता : क्या ज्ञानी के महात्माओं की भी विराधना नहीं होनी चाहिए?

दादाश्री : ज्ञानी के महात्मा भी तो ज्ञानी ही कहे जाएँगे न! इन महात्माओं की तो क्या बात करते हों! जिन्होंने खुद के हथियार नीचे रख दिए हैं। किसी को मारने का भाव नहीं है। किसी को लूट लेने की इच्छा नहीं है। किसी से कुछ छीन लेने की इच्छा नहीं है। ऐसे, जिन्होंने सभी हथियार नीचे रख दिए हैं, क्रोध-मान-माया-लोभ के!

अनंत जन्मों के नुकसान हैं न, तो यदि एक ही जन्म में वह नुकसान खत्म करना हो तो क्या करना होगा? दादा के पीछे पड़ जाना चाहिए। दादा नहीं हों, तो दादा के कहे हुए शब्दों के पीछे पड़ जाना चाहिए। उनके पीछे पड़कर, अनंत जन्मों के घाटे को एक जन्म में खत्म कर देना चाहिए। कितने जन्मों का घाटा है? हम सब ने अभी तक अनंत जन्म लिए हैं, वह सारा घाटा तो है ही न? वह घाटा खत्म करना होगा या नहीं?

अब तो बीड़ा उठाना है कि, 'सिर्फ यही, और कुछ भी नहीं।' न हो तो मोक्ष का *नियाणां* (अपना सारा पुण्य लगाकर किसी एक चीज़ की कामना) कर लेना, तो ज़्यादा जन्म नहीं होंगे। दो-तीन जन्म होने वाले होंगे तो वे भी नहीं होंगे।

जिस तारीख को मुंबई जाना हो तो वह अपने *लक्ष* में रहता है, उसी तरह यह *लक्ष* में रहना चाहिए कि हमें मोक्ष में जाना है। कहाँ जाना है, यदि वही *लक्ष* में नहीं रहे तो किस काम का? मुंबई जाना है, वह *लक्ष* में रहता है न? या भूल जाते हो?

प्रश्नकर्ता : नहीं भूल सकते।

दादाश्री : उसी प्रकार से यह भी *लक्ष* में रहना चाहिए। हम तो अब उस तरफ जाने को निकले हैं। जल्दी आए या देर से आए लेकिन उस तरफ जाने को निकले हैं। जितना ज़ोर लगाएँगे उतना अपना। ये (दादा) प्रत्यक्ष मिल जाएँगे तो प्लेन की तरह चलेगा, वर्ना यदि सूक्ष्म दादा होंगे तब भी ट्रेन की तरह चलेगा। तो जितना प्लेन से जा पाओ, उतना ठीक है। फिर भी सारा हल आ जाएगा। सिर्फ एक जन्म ही बाकी रहना चाहिए, वह भी पुण्य भोगने के लिए। हमारी आज्ञाओं का पालन किया है न, उससे ज़बरदस्त पुण्य इकट्ठा होता है।

वीज़ा मिला, टिकट बाकी

प्रश्नकर्ता : दादा, महाविदेह क्षेत्र में जाएँगे तब तीर्थंकर को तो प्रत्यक्ष देख पाएँगे न?

दादाश्री : हाँ, देख पाओगे। उनके सामने ही बैठोगे। प्रत्यक्ष देखकर उनके सामने ही बैठना है। उनके दर्शन करने के लिए ही, उसी उद्देश्य से वहाँ जाना है। मेरे पास वे दर्शन नहीं हैं। अभी कमी है, इस दर्शन में। उतना संपूर्ण फल नहीं मिलता, उनके तो पूर्ण दर्शन कहलाते हैं।

टिकट करवाई? वीज़ा करवाया महाविदेह

का? अपने ज्ञान के प्रति सिन्सियर रहना, उसी को ही वीज़ा कहते हैं।

प्रश्नकर्ता : और 'टिकट मिलना' अर्थात्?

दादाश्री : टिकट मिल जाएँ तो उसकी बात ही अलग है। आपकी दशा बिल्कुल मेरे जैसी दशा ही होकर रहेगी। क्योंकि फिर दखल करने वाला कोई रहेगा ही नहीं। अभी कुछ समय के लिए जो चेहरा बिगड़ जाता है न, चेहरे पर से आनंद चला जाता है कभी कभी, वह आपकी पतंग को सामने वाला काटता है न इसलिए। फिर भी पतंग की डोरी आपके हाथ में है। मेरी पतंग को काटने वाला तो कोई है ही नहीं! इसलिए जब आपका भी ऐसा हो जाएगा तो हो गया, टिकट आ गई! यह वीज़ा तो आ गया, वीज़ा मिल गया!

आज्ञा पालन से मिलें टिकट आखिर तक की

प्रश्नकर्ता : यहाँ पर ये जो सभी महात्मा बैठे हैं, उनका क्या होना है?

दादाश्री : उनका जो होना होगा वह होगा। दादा का रक्षण है और दादा से वीज़ा लिया है, अत: उसे जिस स्टेशन पर जाना है, उस स्टेशन पर पहुँच ही जाएगा।

प्रश्नकर्ता : हम दादा के पास आए, दादा ने कहा कि, हमारे पास आए हो तो एक जन्म में, दो जन्म में मोक्ष में जाने वाले हो ही, तब फिर अन्यत्र जाने की बात ही कहाँ है?

दादाश्री : हमने पालघर स्टेशन पर सब को (बॉम्बे) सेन्ट्रल का टिकट दिया है। अत: आपका सेन्ट्रल तक जाना पक्का हो गया। अब आपको जहाँ जाना हो, वहाँ जा सकोगे। बीच में जो भी स्टेशन आए, उनमें से आपको जहाँ उतरना हो वहाँ उतर सकते हो।

मन तो ऐसा कहेगा, 'हो जाएगा, अब हम यहाँ से कहीं आगे तो जा सकेंगे!' तो वह बोरीवली उतर जाता है। यदि मेरी आज्ञा का पूरा पालन करें, तो आखिर तक पहुँच सकते हैं। जैसा पालन करें, वैसा खुद का मन ही बता देता है कि, हम से पूरा नहीं हो रहा है, अब वहाँ उतर जाता है। इस तरह कोई अंधेरी उतर जाता है, कोई दादर उतर जाता है। मुझे उतारना नहीं पड़ता, अपने आप उतर जाता है।

प्रश्नकर्ता : जो बीच में उतर चुके हों, वे वापस आगे जाएँगे तो सही न?

दादाश्री : उनकी भावना होगी तो जाएँगे। बाकी, हमने तो आखिर तक जा सकें ऐसी यह टिकट दी है। हाँ, वह टिकट कुछ टाइम के लिए है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन कितने टाइम के लिए है यह टिकट?

दादाश्री : वह कौन से स्टेशन पर उतरता है, इस पर निर्भर करता है न! जो सत्तर प्रतिशत आज्ञा का पालन करेगा उसके लिए आखिर तक की टिकट है।

कभी आईने में देखकर *ठपका* (उलाहना) देना कि, 'अब तो सीधे रहो, ऐसा अंतिम स्टेशन फिर से नहीं मिलेगा।' क्रमिक मार्ग में हर व्यक्ति अपने-अपने स्टेशन पर तो उतरता है, लेकिन आगे की टिकट लेनी पड़ती है जबकि यह तो लास्ट (अंतिम) स्टेशन है और यहाँ कैसी शांति है! बीच वाले सभी स्टेशनों पर बेचैनी है। यानी अब गाड़ी यहाँ से आगे नहीं जाएगी, तो खाओ-पीओ और दादा की आज्ञा में रहो न!

जय सच्चिदानंद

महात्माओं का व्यक्तित्व सौरभ

प्रश्नकर्ता : महात्मा किसे कहा जाता है?

दादाश्री : जिन्हें आंतरिक संयम रहे, उन्हें महात्मा कहा जाता है। बाह्य संयम तो हो या न भी हो! जब तक कषाय करता है, तब तक महात्मा नहीं कहा जा सकता। 'चंदूभाई' क्रोध करे लेकिन 'खुद' अंदर से मना करता रहे। 'अरेरे, यह क्यों रहा है, यह नहीं होना चाहिए', उसे ऐसा रहे तो वह आंतरिक संयम कहलाता है। उसे महात्मा कहा जाता है!

प्रश्नकर्ता : शुद्धात्मा और महात्मा में क्या फर्क है?

दादाश्री : शुद्धात्मा तो भगवान हैं। महात्मा तो, औरों से ज़रा टॉप पर हो तो उसे महात्मा कहा जाता है। यह तो हम व्यवहार से महात्मा कहते हैं लेकिन हैं तो शुद्धात्मा। शुद्धात्मा तो भगवान हैं लेकिन वे भगवान अभी आप में प्रतीति के रूप में ही प्रकट हुए हैं। वह प्रतीति जब पूर्ण हो जाएगी, तब संपूर्ण अनुभव दशा आएगी। अभी प्रतीति, लक्ष और अनुभव कम-ज़्यादा होते रहते हैं लेकिन जब संपूर्ण अनुभव बरतेगा, जब सभी के साथ अभेदता महसूस होगी, तब वह शुद्धात्मा बन सकेगा। शुद्धात्मा ही परमात्मा है।

वह जो जाना हुआ सही ज्ञान है, वह जाएगा नहीं। वह परमानेन्ट है और वह खुद भी सनातन स्वभाव वाला है, उसका ज्ञान भी सनातन है, सुख भी सनातन है, उसकी बात भी सनातन है और उसकी प्राप्ति के बाद में इंसान को क्या प्राप्त हुआ है? एन.ओ.सी. मिल गया। उस व्यक्ति के लिए किसी भी जगह पर ऑब्जेक्शन नहीं रहेगा। भगवान भी उसके लिए ऑब्जेक्शन नहीं करेंगे।

प्रश्नकर्ता : महात्मा की कार्यवाही क्या है?

दादाश्री : यह जो पिछले जन्म का सारा भरा हुआ माल है, उसे समतापूर्वक जाने देना।

प्रश्नकर्ता : महात्मा की उपमा मिलने के बाद में फिर उसका फर्ज़ क्या है?

दादाश्री : वीतरागता रखनी और राग-द्वेष नहीं करने।

प्रश्नकर्ता : अक्रम मार्ग के महात्माओं की दिनचर्या कैसी होनी चाहिए?

दादाश्री : जैसा माल भरा हुआ है, वह निकलता रहेगा लेकिन राग-द्वेष न हों, वही दिनचर्या है। कोई थप्पड़ लगा जाए, कोई नुकसान कर जाए तो राग-द्वेष न हों, ऐसा होना चाहिए। राग-द्वेष तो दखल है। दखल वाला माल आपको खपाते रहना है, दखल नहीं रहे तब समझो हो चुका। दूसरा, जो है वही माल निकलता रहता है।

प्रश्नकर्ता : महात्माओं का आदर्श जीवन कैसा होना चाहिए?

दादाश्री : आसपास वाले, घर वाले, बाहर वाले, सभी कहें कि 'कहना पड़ेगा'! एक आवाज़, सभी हरी झंडी दिखाएँ। मैं बड़ौदा से निकलता हूँ तो सभी महात्माओं को बताता हूँ! एक महात्मा ने लाल झंडी दिखाई तब मैंने कहा, 'रुको भाई। अरे! गाड़ी रोको।' दो सौ महात्माओं में से एकाध महात्मा लाल झंडी दिखाए तो गाड़ी रुकवा देते हैं। 'क्या बात है, बताओ', उसका समाधान करवाकर

फिर जाते हैं क्योंकि मैं उन महात्माओं के ताबे में हूँ, वे मेरे ताबे में नहीं हैं। अत: अपने महात्माओं को तो सभी के ताबे में रहना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : रोज़ सुबह उठने से लेकर रात तक उनका नित्य कार्यक्रम क्या होना चाहिए?

दादाश्री : यहाँ पर ऐसा कोई नियम नहीं है। जहाँ नियम होता है, वहाँ हिसाब रखना होता है। यहाँ पर तो नो लॉ, लॉ है। अपना यह निश्चय है कि 'ऐसा होना चाहिए, यह नहीं होना चाहिए'। लेकिन फिर भी जो निकले, वही सही। कोई सिगरेट पीता हो और वह बाहर जाकर पी भी आता हो लेकिन मन में ऐसा रहना चाहिए कि 'ऐसा नहीं होना चाहिए'।

प्रश्नकर्ता : ऐसा कुछ है क्या कि सुबह जल्दी उठना चाहिए?

दादाश्री : नहीं, भाई। कोई जल्दी उठता है, तीन बजे से उठकर गरम पानी के लिए आग जलाने वाले भी हैं और कोई देर से उठता हो और साढ़े नौ बज जाएँ, तब मैं कहता हूँ कि 'भाई, सूर्यनारायण कब से उठकर यहाँ आ गए हैं। तू ज़रा सोच तो सही! ये इतने बड़े, उठकर आ गए हैं। तू उनसे भी कितना बड़ा है?' तब वह जल्दी-जल्दी उठ जाता है। क्योंकि तीन बजे से उठकर यहाँ पर आने वाले भी हैं और साढ़े नौ वाले भी हैं। हर तरह के लोग हैं!

प्रश्नकर्ता : जिन लोगों ने यह 'ज्ञान' लिया है, उन्हें रात को किस तरह से सो जाना है? वह समझाइए।

दादाश्री : खुद शुद्धात्मा बनकर बाकी सभी चीज़ों से कहकर कि 'हम अब ऑफिस बंद कर देते हैं। आप सुबह आना, साढ़े छः बजे। अब अभी ऑफिस बंद है।' जो भी विचार आ रहे हों उन सब से कह देना। 'आज पहला दिन है इसलिए रिक्वेस्ट करते हैं कि अब आप यहाँ पर मत आना। वर्ना आपका अपमान हो जाएगा इसलिए फिर से मत आना।' तब फिर वे बंद हो जाएँगे। और 'मैं शुद्धात्मा हूँ, शुद्धात्मा हूँ' इस तरह धीरे से अपने ही कान को सुनाई दे, उस तरह बोलते हुए दादा के चित्रपट का निदिध्यासन करते-करते सो जाना है।

प्रश्नकर्ता : महात्माओं का मोक्ष कब होगा?

दादाश्री : एक-दो जन्म या तीन जन्मों के बाद। यह क्षायक समकित है। ऐसा साठ हज़ार लोगों को दिया है, यह कोई एक-दो की बात नहीं है।

पूरी दुनिया रोंग बिलीफ में है, फिर भी खुद का मानते हैं न? बिल्कुल सचमुच में खुद का मानते हैं न? और हम सब को तो राइट बिलीफ बैठ गई है और वहतो सही ही है। वे लोग गलत को सही मानते हैं फिर भी सही तरीके से वर्तन करते हैं। तो हमें सही को सही तरीके से मानना चाहिए। उसके बाद में सही प्रकार से वर्तन करना चाहिए न! अपना तो एक्ज़ेक्ट सही ही है। अत: आपको सामने वाले व्यक्ति से ऐसा कहना चाहिए कि, 'मैंने शुद्धात्मा पद प्राप्त किया है। मुझसे अन्य कोई प्रश्न मत पूछना। कुछ पूछना हो तो ज्ञानी पुरुष के पास आओ।'

लेकिन अपने सभी लोग अस्पष्ट बोलते हैं न, इसलिए बाहर बात समझ में नहीं आती न लोगों को! आपको बताने में क्या हर्ज है? अपनी जो मान्यता है, वह।

(परम पूज्य दादाश्री की ज्ञानवाणी में से संकलित)

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सानिध्य में सत्संग कार्यक्रम

मोरबी में परम पूज्य दादा भगवान का 118वाँ जन्मजयंती महोत्सव

1 नवम्बर (शनि) शाम 5-30 से 8 – **महोत्सव शुभारंभ (सांस्कृतिक कार्यक्रम)** और **सत्संग**
2-3 नवम्बर (रवि-सोम) सुबह 10 से 12-30 और रात 8-30 से 11 – **सत्संग**
4 नवम्बर (मंगल) सुबह 8 से 9-30 – **जन्मजयंती के अवसर पर पूजन-संदेश-आरती**
सुबह 10-30 से 1 और शाम 5 से 6 (पूज्यश्री के कार द्रष्टि दर्शन)
5 नवम्बर (बुध) सुबह 10 से 12-30 – **सत्संग** और शाम 7-30 से 11 – **ज्ञानविधि**
स्थल : रवापर-घुनडा रोड, पानी की टंकी के सामने, मोरबी, गुजरात. **संपर्क :** 9725344475
सूचना : रजिस्ट्रेशन करवाना आवश्यक है। रजिस्ट्रेशन की अधिक जानकारी Akonnect ऐप पर उपलब्ध है।

वडोदरा

28-29 नवम्बर (शुक्र-शनि) शाम 7-30 से 10-30 – **सत्संग** और **30 नवम्बर** (रवि) शाम 5-30 से 9 – **ज्ञानविधि**
स्थल : जय अंबे क्रिकेट ग्राउन्ड, वाघोडिया रोड, वडोदरा. **संपर्क :** 9090515149

अहमदाबाद

12-13 दिसम्बर (शुक्र-शनि) रात 8 से 11 – **सत्संग** और **14 दिसम्बर** (रवि) शाम 5-30 से 9 – **ज्ञानविधि**
15 दिसम्बर (सोम) रात 8 से 11 – **आप्तपुत्र सत्संग**
स्थल : म्युनिसिपल कोर्पोरेशन ग्राउन्ड, डी मार्ट के सामने, निकोल, अहमदाबाद. **संपर्क :** 9824688399

अडालज

20 से 27 दिसम्बर – **आप्तवाणी 14 भाग-4 पर सत्संग पारायण** (हिन्दी-अंग्रेजी में ट्रान्सलेशन उपलब्ध रहेगा।)
28 दिसम्बर – **श्री सीमंधर स्वामी की छोटी प्रतिमाओं की प्राणप्रतिष्ठा**
2 जनवरी – **परम पूज्य दादाश्री की पुण्यतिथि पर कार्यक्रम**
3 जनवरी (शनि) शाम 5 से 7 – **सत्संग** और **4 जनवरी** (रवि) शाम 4 से 7-30 – **ज्ञानविधि**

पूज्य नीरूमाँ / पूज्य दीपकभाई को देखिए भारत में टी.वी. चैनल पर...

- '**साधना**' पर हर रोज़ सुबह 7-50 से 8-15 (हिन्दी में)
- '**दूरदर्शन उत्तरप्रदेश**' पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8 और दोपहर 3 से 4 (हिन्दी में)
- '**दूरदर्शन सह्याद्रि**' पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-45 (मराठी में)
- '**आस्था कन्नड़ा**' पर हर रोज़ दोपहर 12 से 12-30 तथा शाम 4-30 से 5 (कन्नड़ा में)
- '**दूरदर्शन चंदना**' पर हर रोज़ शाम 7 से 7-30 (कन्नड़ा में)
- '**दूरदर्शन गिरनार**' पर रोज़ सुबह 7-30 से 8-30, रात 9-30 से 10-30 (गुजराती में)

त्रिमंदिरो के संपर्क : अडालज : 9328661166-77, **राजकोट :** 9924343478, **भूज :** 9924345588, **मुंबई :** 9323528901, **अंजार :** 9924346622, **मोरबी :** 9924341188, **सुरेन्द्रनगर :** 9737048322, **अमरेली :** 9924344460, **वडोदरा :** 9574001557, **गोधरा :** 9723707738, **जामनगर :** 9924343687, **भावनगर :** 9313882288, **अहमदाबाद (दादा दर्शन) :** 9574001445, **वडोदरा (दादा मंदिर) :** 9924343335, **दिल्ली :** 9810098564, **बैंगलूर :** 9590979099, **कोलकता :** 9830080820
यु.एस.ए.-केनेडा: +1 877-505-3232, **यु.के.:** +44 330-111-3232, **ऑस्ट्रेलिया:** +61 402179706

अडालज : पर्युषण पारायण : 20 से 27 अगस्त 2025

कौटुंबिकजन के प्रतिक्रमण

अडालज : गुरुपूर्णिमा दर्शन : 28 अगस्त 2025

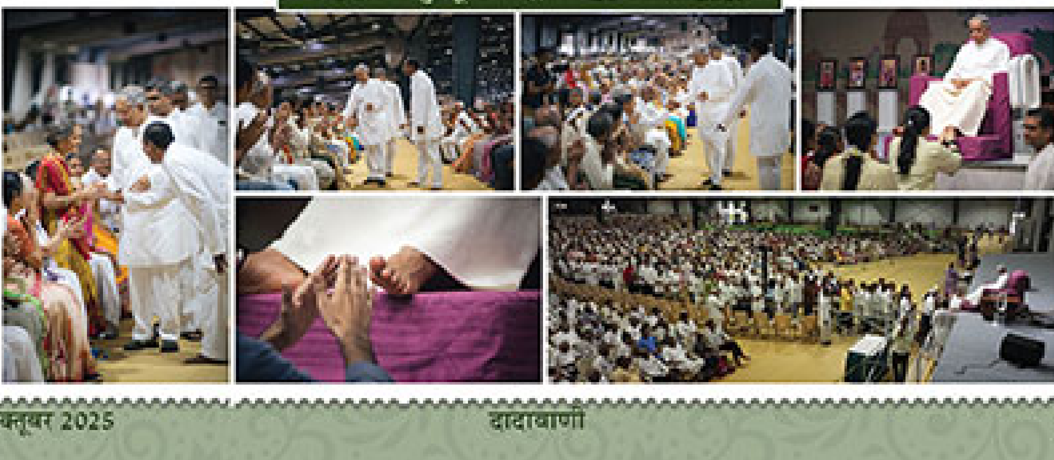

अक्तूबर 2025
वर्ष-20 अंक-12
अखंड क्रमांक - 240

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. G-GNR-348/2024-2026
Valid up to 31-12-2026
Licensed to Post Without Pre-payment
No. PMG/NG/036/2024-2026
Valid up to 31-12-2026
Posted at Adalaj Post Office
on 15th of every month.

वैभव, पाँच आज्ञा से

ये आज्ञा पालन करने से सभी पुण्य बंधन ऐसा होगा कि वहाँ पर मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। वहाँ पर तो.. तैयार बंगले-गाड़ियाँ होंगी, वहीं पर जन्म होगा और वहाँ पर फिर वे भगवान के पास छोड़ने आएँगे गाड़ियों में। इससे ऐसा पुण्य बंधन होगा। ये हमारी आज्ञा पालन करने से पुण्यानुबंधी पुण्य का बंधन होगा। ज़रा भी मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। जैसे ही सोचा कि, 'प्रभु के पास जाने का टाइम हो गया', तो वह घड़ी में देखे, उससे पहले तो गाड़ी आकर खड़ी हो जाएगी! यानी इस तरह से सारी तैयारियाँ रहेंगी आगे। अत: अब आप हमारी आज्ञा का पालन करना और निरंतर समाधि रहेगी, उसकी गारन्टी देता हूँ।

– दादाश्री

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation - Owner.
Printed at Amba Multiprint, Opp. H B Kapadiya New High School, Chhatral - Pratappura Road,
At - Chhatral, Tal : Kalol, Dist. Gandhinagar – 382729.